पञ्चदशी स्तवराज मालिका





पञ्चदशी स्तवराज मालिका

(नवावरणस्थ देवी गायत्रीमन्त्रसहिता)



Panchadashi Stavaraja Malika

-A collection of Pancadashi mantra Stotrams

(Navaavaranastha Devi Gayathrimantra Sahita)



Compiled by

Lalitha Ramani

PANCHADASHI STAVARAJA MALIKA

Published on the occasion of
DEVI SHARAN NAVARATHRI
Oct 2018

For Copies
LALITHA RAMANI
Contact : +91 9866504332
Email : varamala@gmail.com

मूल्यं - अमूल्यं

Printed at :
DEEPTHI TECHNICOLOR PRINTERS
OPP BALAJI TOWERS, GANDHI NAGAR
HYDERABAD - 500 080

विषय सूची

श्रीगुरोः पादुका मूर्ध्नि श्रीचक्रं हृदि देवता।
श्रीविद्या यस्य जिह्वाग्रे स साक्षात्परमः शिवः॥

shrIguroH pAdukA mUrdhni shrIcakraM hR^idi devatA |
shrIvidyA yasya jihvAgre sa sAxAtparamaH shivaH ||

- *Shrividya Nityanhikam*

Shri Rajarajeshwari Mahatripurasundari is the presiding deity of the Shrividya mantraraja 'Panchadashi', which is initiated to a sadhaka by an able guru, only after the sadhaka has obtained the eligibility by HER grace and through several births of penance. For such a shrividya sadaka, the venerable guru's lotus feet always remain on his sahasrara and the shrichakra yantra forever dwells in his heart and the mantraraja Panchadashi is incessantly uttered on his tongue. Such an upasaka, then, truly befits a manifestation of Lord Shiva himself.

Stotrams have a special place in shrividya saparya, which describe the complete Shricakra puja paddhati. If these stotrams are embedded with the Panchadashi mantraraja, then the fruits of recitation are most certainly enhanced. The greatness of Panchadashi - a fifteen lettered mantra (and Shodashi – a sixteen lettered mantra) are glorified by Shrividya related texts.

This book **Panchadashi Stavaraja Malika,** is a compilation of twenty stotra's and the uniqueness is that every stanza begins with the Panchadashi mantra-bija's (in the same order). Hence, reciting these stotra's is definitely bound to fulfill all kinds of wishes and bring

immense happiness and liberation to the sadhaka, since Shri Rajajeshwari Mahatripurasundari is भोग (enjoyment) and मोक्ष (liberation) प्रदायिनी!!!

It is purely a divine blessing that we dampati have received the mantra deeksha from our revered gurudev and mahapurusha **H.H.Anantashri Vibhushita Jagadguru Shankaracharya of Jyotishpeeth and Dwaraka-Sharadapeeth Swami Shri Swaroopanand Saraswathiji maharaj ji.**

With H.H divine blessings and the abundant grace of devi Shri Rajarajeshwari Mahatripurasundari and, the continued guidance from the lotus feet of my shri-guru **Shrimat Paramahams Parivrajaka Dandi Swami Shri Amritananand Saraswathiji**, I have been able to collect these stotra's and titled them as '**पञ्चदशी स्तवराज मालिका**'.

This includes collective works of Shri Adi Shankaracharya, Shri Sacchidananda Shivabhinava Nrisimha Bharathi, Shri Thyagaraja and several other mahaans.

I am deeply indebted to my gurus for their blessings and love. I am also very grateful to Shri Namboodari Ramesh ji, an eminent Shrividyopasaka himself, in providing me with some rare stotra's, which are a part of this collection.

No collection is exhaustive and with Devi's grace many more such stotra's will always surface. I hereby present 20 such gems of stotra's collected till now, for the benefit of all devi bhaktas. As an addendum, the gayathri mantras of all the devatas in the Shrichakra (taken from Shrividyarnava Tantra), is presented.

I humbly request you to forgive me for any omissions or mistakes and to kindly email me the corrections so that they can be incorporated and may be properly recited by the sadhakas..

यत्रैव यत्रैव मनो मदीयं तत्रैव तत्रैव तव स्वरूपम्।
यत्रैव यत्रैव शिरो मदीयं तत्रैव तत्रैव पदद्वयं ते॥

 Forever at the lotus feet of my Shriguru 

श्रीमात्रे नमः

Lalitha Ramani

varamala@gmail.com

श्रीगुरोः पादुका मूर्ध्नि श्रीचक्रं हृदि देवता।
श्रीविद्या यस्य जिह्वाग्रे स साक्षात्परमः शिवः॥

-श्रीविद्यानित्याह्निकम्

भगवती श्री राजराजेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी, श्रीविद्यामन्त्रराज **पञ्चदशी** की अधिष्ठात्री है, जो केवल गुरमुखगम्य है और साधक को देवी की कृपा तथा जन्मजन्मांतरकृत पुण्य से ही लभ्य है। जिस साधक के सहस्रार में सदा श्रीगुरुपादुकाएँ हो और हृदय में निरंतर श्रीचक्रदेवता हो तथा जिह्वा पर सदैव श्रीविद्यामन्त्रराज पञ्चदशी का जप हो, ऐसा उपासक साक्षात परमशिव ही है ।

श्रीविद्या सपर्या में स्तोत्रों का विशिष्ट स्थान है, जो श्रीचक्र की पूजापद्धति का पूर्णरूप से वर्णन करता है। यदि इन स्तोत्रों में पञ्चदशीमंत्र का समावेश हो जाये तो, इनकी पाठ का महत्व द्विगुणित होकर निश्चय ही साधक को बहुसंख्यक फल प्रदान करता है। श्रीविद्या पञ्चदशी (और षोडशी), जैसे नाम से इंगित है, पंद्रह अथवा सोलह बीजाक्षरों का अत्यंत प्रभावशाली मंत्र है । श्रीविद्या विषयक ग्रन्थ, इस मंत्र की महानता और विपुलता से परिपूर्ण है ।

प्रस्तुत ग्रन्थ '**पञ्चदशी स्तवराज मालिका**', ऐसी बीस दुर्लभ स्तोत्रों का संग्रह है, जिनके प्रत्येक श्लोक का प्रारम्भ पञ्चदशी मंत्रराज के वर्णों से, उसी क्रम में रचित है। अतः इनकी पाठ से साधक तथा देवीभक्त, अपनी

अपनी इष्टकामनाओं की पूर्ति के साथ-साथ सुख और मुक्ति निश्चय ही प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि भगवती 'भोग-मोक्ष प्रदायिनी' है !!!

हमारा सौभाग्य है की पूज्यगुरुदेव और इस युग के महापुरुष **अनन्तश्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वतीजी महाराज जी** से, हम दम्पतियों को मंत्रदीक्षा प्राप्त हुई है।

सद्गुरुदेव की कृपा, भगवती की अपार करुणा और मेरे श्रीगुरु **श्रीमत्परमहंसपरिव्राजक दण्डी स्वामी श्रीमदमृतानन्दसरस्वतीजी** की कृपामय आदेश और मार्गदर्शन से ही, यह **'पञ्चदशी स्तवराज मालिका'** के स्तोत्र हमें प्राप्त हुए है। इस हेतु, मैं उन महापुरुषों की हृदय से अत्यंत आभारी हूँ और उनके श्रीचरणों में कोटि कोटि नमन अर्पित करती हूँ।

इस संग्रह में श्री आदिशंकराचार्यजी, श्री सच्चिदानंद शिवाभिनव भारतीतीर्थजी, श्री त्यागराजजी और अन्य महानों द्वारा रचित स्तोत्र उपस्थित है। श्रीविद्योपासक श्री नम्बूदरी रमेश जी (चेन्नईवासी) की प्रेरणा से, इस संग्रह के कुछ दुर्लभ स्तोत्र हमें उपलब्ध हुए है। इसके लिए मैं उनके प्रति आभारी हूँ।

देवी-देवताओं के स्तोत्रों का कोई भी संग्रह कदापि संपूर्ण नहीं है। उपासकों के हेतु, अन्य अनुपम अद्वितीय दुर्लभ स्तोत्रों का आविष्कार

हमेशा होता रहे, यही हमारी प्रार्थना है। वर्तमान संग्रह में देवीभक्तों तथा उपासकवर्गों के समक्ष २० स्तोत्ररत्न प्रस्तुत है। परिशिष्ट में, श्रीविद्यार्णवतंत्र नामक ग्रन्थ से, श्रीचक्र के सभी आवरण देवताओं का गायत्रीमंत्र भी प्रेषित है।

विद्वान साधकों के संज्ञान में यदि इनमें कोई त्रुटियाँ हो तो में क्षमा चाहती हूँ तथा करबद्ध निवेदन करती हूँ कि मुझे इनसे अवगत कराने की कष्ट करें, जिससे भविष्य में इनको सुधार दिया जाय और साधकगण भी शुद्धपाठ कर सकें ।

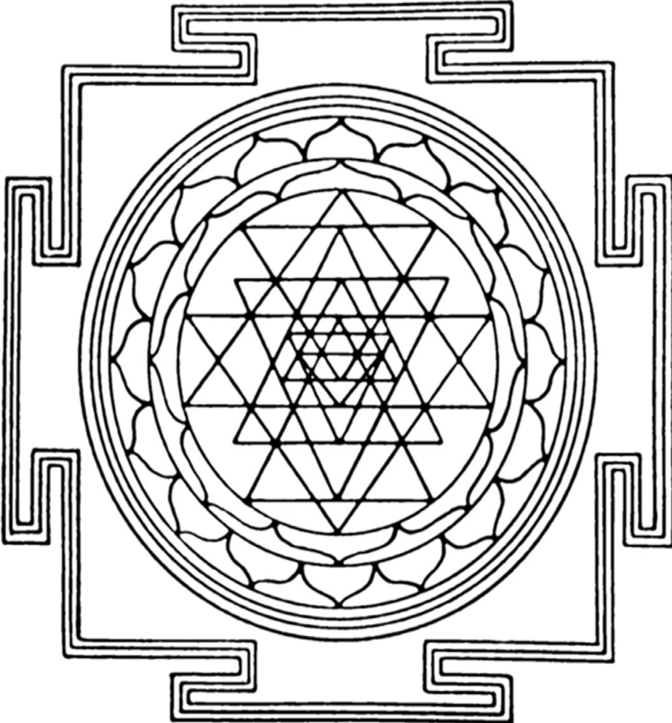
यत्रैव यत्रैव मनो मदीयं तत्रैव तत्रैव तव स्वरूपम्।
यत्रैव यत्रैव शिरो मदीयं तत्रैव तत्रैव पदद्वयं ते॥

 सदा श्रीसद्गुरुदेव की श्रीचरणों में 

श्रीमात्रे नमः

Lalitha Ramani

varamala@gmail.com



श्रीत्रिपुरसुन्दरीप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कस्तूरिकाकृतमनोज्ञललामभास्वदर्धेन्दुमुग्धनिटिलाञ्चलनीलकेशीम्।
प्रालम्बमाननवमौक्तिकहारभूषां प्रातःस्मरामि ललितां कमलायताक्षीम्॥ १ ॥

एणाङ्कचूडसमुपार्जितपुण्यराशिमुत्तप्तहेमतनुकान्तिझरीपरीताम्।
एकाग्रचित्तमुनिमानसराजहंसीं प्रातः स्मरामि ललितापरमेश्वरीं ताम्॥ २ ॥

ईषद्विकासिनयनान्तनिरीक्षणेन
साम्राज्यदानचतुरां चतुराननेड्यां।
ईषाङ्कवासरसिकां रससिद्धिदात्रीं
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ ३ ॥

लक्ष्मीशपद्मभवनादिपदैश्चतुर्भिः
संशोभिते च फलकेन सदाशिवेन।
मञ्चे वितानसहिते ससुखं निषण्णां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ ४ ॥

ह्रीङ्कारमन्त्रजपतर्पणहोमतुष्टां
ह्रीङ्कारमन्त्रजलजातसुराजहंसीम्।
ह्रीङ्कारहेमनवपञ्जरसारिकां तां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ ५ ॥

हल्लीसलास्यमृदुगीतिरसं पिबन्ती-
माकूणिताक्षमनवद्यगुणांबुराशिम्।
सुप्तोत्थितां श्रुतिमनोहरकीरवाग्भिः
प्रातःस्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ ६ ॥

सच्चिन्मयीं सकललोकहितैषिणीं च
संपत्करीहयमुखीमुखदेवतेड्याम्।
सर्वानवद्यसुकुमारशरीररम्यां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ ७॥

कन्याभिरर्धशशिमुग्धकिरीटभास्व-
च्चूडाभिरङ्कगतहृद्यविपञ्चिकाभिः।
संस्तूयमानचरितां सरसीरुहाक्षीं
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ ८॥

हत्वाऽसुरेन्द्रमतिमात्रबलावलिप्त-
भण्डासुरं समरचण्डमघोरसैन्यम्।
संरक्षितार्तजनतां तपनेन्दुनेत्रां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ ९॥

लज्जावनम्ररमणीयमुखेन्दुबिम्बां
लाक्षारुणाङ्घ्रिसरसीरुहशोभमानाम्।
रोलम्बजालसमनीलसुकुन्तलाढ्यां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ १०॥

ह्रींकारिणीं हिममहीधरपुण्यराशिं
ह्रीङ्कारमन्त्रमहनीयमनोज्ञरूपाम्।
ह्रीङ्कारगर्भमनुसाधकसिद्धिदात्रीं
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ ११॥

सञ्जातजन्ममरणादिभयेन देवीं
संफुल्लपद्मनिलयां शरदिन्दुशुभ्राम्।
अर्धेन्दुचूडवनितामणिमादिवन्द्यां
प्रातःस्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ १२॥

कल्याणशैलशिखरेषु विहारशीलां
कामेश्वराङ्कनिलयां कमनीयरूपाम्।
काद्यर्णमन्त्रमहनीयमहानुभावां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ १३ ॥

लम्बोदरस्य जननीं तनुरोमराजीं
बिम्बाधरां च शरदिन्दुमुखीं मृडानीम्।
लावाण्यपूर्णजलधिं जलजातहस्तां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ १४ ॥

ह्रीङ्कारपूर्णनिगमैः प्रतिपाद्यमानां
ह्रीङ्कारपद्मनिलयां हतदानवेन्द्राम्।
ह्रीङ्कारगर्भमनुराजनिषेव्यमाणां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ १५ ॥

श्रीचक्रराजनिलयां श्रितकामधेनुं
श्रीकामराजजननीं शिवभागधेयाम्।
श्रीमद्गुहस्य कुलमङ्गलदेवतां तां
प्रातः स्मरामि मनसा ललिताधिनाथाम् ॥ १६ ॥

॥ इति त्रिपुरसुन्दरीप्रातःस्मरणस्तोत्रं समाप्तम्॥

कल्याणवृष्टिस्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभि-
र्लक्ष्मीस्वयंवरणमङ्गलदीपिकाभिः ।
सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले
नाकारि किं मनसि भाग्यवतां जनानाम् ॥ १ ॥

एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते
त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थगिते च नेत्रे ।
सांनिध्यमुद्यदरुणायुतसोदरस्य
त्वद्विग्रहस्य परया सुधयाप्लुतस्य ॥ २ ॥

ईशत्वनामकलुषाः कति वा न सन्ति
ब्रह्मादयः प्रतिभवं प्रलयाभिभूताः ।
एकः स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते
यः पादयोस्तव सकृत्प्रणतिं करोति ॥ ३ ॥

लब्ध्वा सकृत्त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं
कारुण्यकन्दलितकान्तिभरं कटाक्षम् ।
कन्दर्पकोटिसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः
संमोहयन्ति तरुणीर्भुवनत्रयेऽपि ॥ ४ ॥

ह्रींकारमेव तव नाम गृणन्ति वेदा
मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे ।
त्वत्संस्मृतौ यमभटाभिभवं विहाय
दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः ॥ ५ ॥

हन्तुः पुरामधिगलं परिपीयमानः
क्रूरः कथं न भविता गरलस्य वेगः।
नाश्वासनाय यदि मातरिदं तवार्धं
देवस्य शश्वदमृताप्लुत शीतलस्य ॥ ६ ॥

सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते देवि
त्वदङ्घ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः।
किं च स्फुरन्मुकुटमुज्वलमातपत्रं
द्वे चामरे च महतीं वसुधां ददाति ॥ ७ ॥

कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपादनेषु
कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं
त्वय्येव भक्तिभरितं त्वयि बद्धतृष्णम् ॥ ८ ॥

हन्तेतरेष्वपि मनांसि निधाय चान्ये
भक्तिं वहन्ति किल पामरदैवतेषु।
त्वामेव देवि मनसा समनुस्मरामि
त्वामेव नौमि शरणं जननि त्वमेव ॥ ९ ॥

लक्ष्येषु सत्स्वपि कटाक्षनिरीक्षणाना-
मालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कदाचित्।
नूनं मया तु सदृशः करुणैकपात्रं
जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा ॥ १० ॥

ह्रींह्रींमिति प्रतिदिनं जपतां तवाख्यां
किं नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधिवासे।
मालाकिरीटमदवारणमाननीया
तान्सेवते वसुमती स्वयमेव लक्ष्मीः ॥ ११ ॥

संपत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदाननिरतानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ॥ १२ ॥

कल्पोपसंहृतिषु कल्पितताण्डवस्य
देवस्य खण्डपरशोः परभैरवस्य।
पाशाङ्कुशैक्षवशरासनपुष्पबाणा
सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका ॥ १३ ॥

लग्नं सदा भवतु मातरिदं तवार्धं
तेजः परं बहुलकुङ्कुमपङ्कशोणम्।
भास्वत्किरीटममृतांशुकलावतंसं
मध्ये त्रिकोणनिलयं परमामृतार्द्रम् ॥ १४ ॥

ह्रींकारमेव तव नाम तदेव रूपं
त्वन्नाम दुर्लभमिह त्रिपुरे गृणन्ति।
त्वत्तेजसा परिणतं वियदादिभूतं
सौख्यं तनोति सरसीरुहसंभवादेः ॥ १५ ॥

ह्रींकारत्रयसंपुटेन महता मन्त्रेण संदीपितं
स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्रवित्।
तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी
वाणी निर्मलसूक्तिभारभरिता जागर्ति दीर्घं वयः ॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यकृतः कल्याणवृष्टिस्तवः संपूर्णः ॥

आर्यापञ्चदशीस्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

करकलितचापबाणां कल्हाराङ्गिं नमामि कल्याणीम्।
कंदर्पदर्पजननीं कलुषहरां कामितार्थफलदात्रीम् ॥ १ ॥

एषा स्तोतुम् वाणी नैव समर्था तवेशि महिमानम्।
शेषोऽप्यब्दसहस्रैः शेषं कृतवान् महेशि तव चरितम् ॥ २ ॥

ईशित्वादिसुपूज्यामिन्दिन्दिरकेशाभारसूल्लसिताम्।
इन्दीवरदलनयनामीप्सितदात्रीं नमामि शर्वाणीम् ॥ ३ ॥

लसदरुणभानुकोटिद्युतिनिधिमम्बां सुरेन्द्रलक्ष्यपदाम्।
ललितां नमामि बाले ललितशिवहृदयकमलकलहंसीम् ॥ ४ ॥

ह्रींकारबीजरूपे हिमगिरिकन्ये हरीन्द्रभववन्द्ये।
हिमकरधवलच्छत्रे हिताय भव नः सदा महाराज्ञि ॥ ५ ॥

हर्षोत्करजनयित्री हसितज्योत्स्ना तवेयमनवद्ये।
हरगलहालाहलमपि हरति त्रैलोक्यमोहतिमिरं ते ॥ ६ ॥

सकलमनोरथदाने सत्यपि चरणे नतस्य तव निपुणे।
संसेव्यते सुरतरुः सदाज्ञलोकैर्नु कृच्छ्रफलदाता ॥ ७ ॥

कनकरुचे चटुलगते कठिनस्तनभारनम्रकृशमध्ये।
कान्ते कङ्कणहस्ते कम्बुग्रीवे नमोऽस्तु ते करुणे ॥ ८ ॥

हरनयनानन्दकरे हरङ्कसंस्थे हरिप्रमुखवन्द्ये।
हरनटनसाक्षिभूते हरार्धदेहे नमोऽस्तु ते सुकृपे ॥ ९॥

लक्ष्मीप्रदकरुणा या लक्ष्मीपतिमल्पमम्ब कर्तुमलम्।
लक्ष्यं कुरु मां तस्या लावण्यामृततरङ्गमाले त्वम् ॥ १०॥

ह्रींकाररत्नगर्भे हेमाचलमन्दरस्तनोल्लसिते।
हेरम्बप्रियजननी हे वसुधे देहि मे क्षमां नित्यम् ॥ ११॥

सत्संप्रदायविदिते सकलागमनिगमसारतत्त्वमयि।
सावित्र्यर्पय वदने सकलरसाश्रयसुवाक्सुधाधाराम् ॥ १२॥

करकङ्कणमणिदिनमणिकरविकसितचरणकमलमकरन्दम्।
करुणापयोनिधे मे कामाक्षि स्वान्तषट् पदः पिबतु ॥ १३॥

लसदिक्षुचापसुमशरलक्षितदोर्वल्लिवीर्यमभयेन।
लक्षाधिकदैत्यकुलं लवुपटवासं कृतं कथं चित्रम् ॥ १४॥

ह्रींकारकेलिभवने हिमकरमौल्यङ्कमञ्जुपर्यङ्के।
हृदयसरोजे मे वस हृदयानन्दप्रभोधपरहंसि ॥ १५॥

आर्यापञ्चदशीं तामार्यां यो भजति शुद्धधीर्नित्यम्।
भार्ये लक्ष्मीवाण्यौ पर्यातात् तस्य सादरं भवतः ॥ १६॥

॥ इत्यानन्दनाथपादपद्मोपजीविना काश्यपगोत्रोत्पन्नेनान्ध्रेण त्यागराजनाम्ना विरचितमार्यापञ्चदशीस्तोत्रं संपूर्णम्॥

त्रिपुरातिलकम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्पशाखिगणसत्प्रसूनमधुपानकेलिकुतुकभ्रमत्
षट् पदारवमनोहरे कनकभूधरे ललितमण्डपे।
अत्युदारमणिपीठमध्यनिवासिनीमखिलमोहिनीं
भक्तियोगसुलभां भजे भुवनमातरं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ १ ॥

एककालसमुदीयमानतरुणार्ककोटिसदृशस्फुर-
देहकान्तिभरधोरणीमिलनलोहितीकृतदिगन्तराम्।
वागधीतविभवां विपद्यभयदायिनीमखिलमोहिनीं
आगमार्थमणिदीपिकामनिशमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ २ ॥

ईषदुन्मिषदमर्त्यशाखिकुसुमावलीविमलतारका-
वृदसुन्दरसुधांशुखण्डसुभगीकृतातिगुरुकैशिकाम्।
नीलकुञ्चितघनालकां निटिलभूषणायतविलोचनां
नीलकण्ठसुकृतोन्नतिं सततमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ३ ॥

लक्ष्महीनविधुलक्षनिर्जितविचक्षणाननसरोरुहां
इक्षुकार्मुकशरासनोपमितचिल्लिकायुगमतल्लिकाम्।
लक्षये मनसि सन्ततं सकलदुष्कृतक्षयविधायिनीं
उक्षवाहनतपोविभूतिमहदक्षरां त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ४ ॥

ह्रीमदप्रमदकामकौतुककृपादिभावपिशुनायत-
स्निग्धमुग्धविशदत्रिवर्णविमलालसालसविलोचनाम्।
सुन्दराधरमणिप्रभामिलितमन्दहासनवचन्द्रिकां
चन्द्रशेखरकुटुम्बिनीमनिशमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ५ ॥

हस्तमृष्टमणिदर्पणोज्ज्वलमनोज्ञदण्डफलकद्वये
बिम्बितानुपमकुण्डलस्तबकमण्डिताननसरोरुहाम्।
स्वर्णपङ्कजदलान्तरुल्लसितकर्णिकासदृशनासिकां
कर्णवैरिसखसोदरीमनिशमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ६ ॥

सन्मरन्दरसमाधुरीतुलनकर्मठाक्षरसमुल्लस-
न्नर्मपेशलवचोविलासपरिभूतनिर्मलसुधारसाम्।
कम्रवक्त्रपवनाग्रहप्रचलदुन्मिषद्भ्रमरमण्डलां
तुर्महे मनसि शर्मदामनिशमम्बिकां त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ७ ॥

कम्रकान्तिजिततारपूरमणिसूत्रमण्डलसमुल्लसत्
कण्ठकाण्डकमनीयतापहृतकम्बुराजरुचिडम्बराम्।
किञ्चिदानतमनोहरां सयुगचुम्बिचारुमणिकर्णिकां
पञ्चबाणपरिपन्थिपुण्यलहरीं भजे त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ८ ॥

हस्तपद्मलसदिक्षुचापसृणिपाशपुष्पविशिखोज्ज्वलां
तप्तहेमरचिताभिरामकटकाङ्गुलीयवलयादिकाम्।
वृत्तनिस्तुलनिरन्तरालकठिनोन्नतस्तनतृणीभव-
न्मत्तहस्तिवरमस्तकां मनसि चिन्तये त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ९ ॥

लक्षगाढपरिरम्भतिष्ठहरहासगौरतरलोल्लसत्
चारुहारनिकराभिरामकुचभारतान्ततनुमध्यमाम्।
रोमराजिललितोदरीमधिकनिम्ननाभिमवलोकये
कामराजपरदेवतामनिशमाश्रये त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ १० ॥

हीरमण्डलनिरन्तरोल्लसितजातरूपमयमेखला
चारुकान्तिपरिरम्भसुन्दरसुसूक्ष्म चीनवसनाञ्चिताम्।
मारवीररसचातुरीधृतधुरीणतुङ्गजघनस्थलां
धारये मनसि सन्ततं त्रिदशवन्दितां त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ ११ ॥

सप्तसप्तकिरणानभिज्ञपरिवर्धमानकदलीतनु-
स्पर्धिमुग्धमधुरोरुदण्डयुगमन्दितेन्दुधरलोचनाम्।
वृत्तजानुयुगवल्गुभावजितचित्तसम्भवसमुद्गकां
नित्यमेव परिशीलये मनसि मुक्तिदां त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ १२॥

कण्ठकाण्डरुचिकुण्डताकरणलीलया सकलकेकिनां
जङ्घया तुलितकेतकीमुकुलसङ्घया भृतमुदञ्चिताम्।
अम्बुजोदरविडम्बिचारुपदपल्लवां हृदयदर्पणे
बिम्बितामिव विलोकये सततमम्बिकां त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ १३॥

लभ्यमानकमलार्चनप्रणतितत्परैरनिशमास्थया
कपकोटिशतसञ्चितेन सुकृतेन कैश्चन नरोत्तमैः।
कल्पशाखिगणकल्प्यमानकनकाभिषेकसुभगाकृतिं
कल्पयामि हृदि चित्पयोजनवषट्पदीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ १४॥

ह्रीमिति प्रथितमन्त्रमूर्तिरचलात्मजेत्युदधिकन्यके-
त्यम्बुजासनकुटुम्बिनीति विविधोपगीतमहिमोदयाम्।
सेवकाभिमतकामधेनुमखिलागमावगमवैभवां
भावयामि हृदि भाविताखिलचराचरां त्रिपुरसुन्दरीम् ॥ १५॥

स्तोत्रराजममुमात्तमोदमहरागमे प्रयतमानसो
कीर्तयन्निह नरोत्तमो विजितवित्तपो विपुलसम्पदाम्।
प्रार्थ्यमानपरिरम्भकेलिरबलाजनैरपगतैषणो
गात्रमात्रपतनावधावमृतमक्षरं पदमवाप्नुयात्॥

॥ इति त्रिपुरातिलकस्तोत्रं समाप्तम्॥

श्रीचक्रराजवर्णनम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

अङ्काधिरूढया श्रीवल्लभयाऽऽश्लिष्टसुन्दरस्वाङ्गम्।
कुङ्कुमपङ्किलदेहं शङ्करतनयं नमामि वाक्सिद्धये ॥ १ ॥

जय जय चक्राधीश्वरि जय जय लोकैकपरजननि।
जय जय निगमातीते जय जय कामेशवामाक्षि ॥ २ ॥

कदा देवि साङ्गं मुदा पूजयित्वा हृदि ब्रह्ममोदं भजेयं कृतार्थी
भवेयं क्षणार्थी सदा लोकतन्त्रे निमग्नस्त्वदर्चां विधानेन कर्तुं।
विहीनः स्वशक्त्या स्तवेनापि राज्ञीं सदाभावयामीति कृत्वा हृदब्जे
पदाब्जं त्वदीयं सदा भावयित्वा धिया पूजयामि॥ प्रकृष्टे त्रिरेखाधरा श्रेणिमादि
प्रसिद्धाभिरीड्यां च मात्रौघसंसेव्यमानाञ्च संक्षोभिणी
मुख्यमुद्राधिदेवीभिराराध्यमानां त्रिलोकैकमोहाख्यचक्राधिदेवीं त्रिपूर्वां पुरां
लोकधात्रीं प्रकटाख्यदेवीभिराराध्यमानां च संक्षोभिणी मुद्रया राजमानां
नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ ३ ॥

एणाङ्कचूडालदेवीं द्वितीये च चक्रे कलाब्जेन युक्तेऽभिवाञ्छाप्रपूरे
कलाकामकर्षादिदेवीभिरर्धेन्दुभास्वत्छिरोभूषणाभिः
प्रवालप्रभाभिश्चतुर्बाहुसङ्क्रान्तचापासिचर्मप्रबाणाभि रामाभिरेताभिरीढ्यां च
गुप्ताभिधानाभिरारक्तनेत्रां पुरेशीं सदासर्वविद्राविणीमुद्रिकायुक्तहस्तां नमामि
स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ ४ ॥

ईशाधिदेवीं तृतीयेऽष्टपद्मे स्वनाम्ना जगत्क्षोभणेऽस्मिन्मनोज्ञे
त्वनङ्गप्रसूनादिदेवीभिरत्युग्रविक्रान्तियुक्ताभिरिक्षुं च कोदण्डमस्त्रं च पौष्पं
तथाकञ्चुकं चोत्पलंधारयन्तीभिरत्यन्तशोणाभिरत्यन्तगुप्ताभिरासेव्यमानां च
चक्राधिनाथां मुदा सुन्दरीं पाणिपद्मेन चाकर्षिणीमुद्रिकाढ्यां नमामि स्वमूर्ध्ना
नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ ५ ॥

लक्ष्यां महायोगिवृन्दैस्तुरीये महाचक्रमध्ये तु सौभाग्यदेऽस्मिन्मनोज्ञे
जगत्संख्यकास्त्रे निषण्णां च संक्षोभिणीमुख्यदेवीभिरत्यन्ततीव्राभिरारक्तसिदूर
पङ्केन भास्वल्ललाटाभिरत्युग्रवह्निप्रभाभिस्तथा वह्निचापं शरं चक्रखड्गौ
वहन्तीभिराराधितां संप्रदायाभिधाभिश्च चक्रेश्वरीं वासिनीं पाणिपद्मेन
वश्यंकरीमुद्रिकां धारयन्तीं नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ ६ ॥

ह्रींकाररूपां महेशीं भवानीं तथा पञ्चमेऽस्मिन्दशारे बहिर्भूतचक्रे मनोज्ञे सुनाम्ना
हि सर्वार्थसाधे निषण्णां च सिद्धिप्रदामुख्यदेवीभिरत्यच्छदेहप्रभाभिः
कराब्जैश्चतुर्भिर्गदां पाशघण्टामणी परशुं धारयन्तीभिरेताभिरुत्तीर्णदेवीभि-
राराध्यमानां चक्राधिनाथां पुराश्रीसमाख्यां कराब्जेन चोन्मादिनीमुद्रिकां
धारयन्तीं सदाहं नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ ७ ॥

हर्यश्वमुख्यैः सुरैः पूजितां तां सुचक्रेऽपि षष्ठे तथान्तर्दशारेऽत्र नाम्ना च
रक्षाकरेऽस्मिन्मनोज्ञे च सर्वज्ञदेवीमुखाभिश्चतुर्बाहुयुक्ताभिरत्यच्छमुक्ताति-
गौराभिरब्जातहस्तैश्च वज्रं च शक्तिं तथा तोमरं चक्रराजं वहन्तीभिरेताभिरीड्यां
निगर्भाभिधाभिश्च चक्रेश्वरीं मालिनीं हस्तपद्मे महाङ्कों वहन्तीं नमामि स्वमूर्ध्ना
नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ ८ ॥

सर्वस्व लोकस्य चाधारभूतां तां सप्तमेऽस्मिन् गजास्त्रे मनोज्ञे च रोगप्रणाशे
वशिन्यादिवाग्देवताभिश्च संरक्तपुष्पप्रभाभिः कराब्जैः शरं चापवीणां च पुस्तं
वहन्तीभिरत्यच्छमुक्तासरेणोल्लसन्तीभिरेताभिरीड्यां रहस्याभिधाभिश्च
चक्रेश्वरीं सिद्धनाथां कराब्जेन खेचर्यभिख्यां सुमुद्रां वहन्तीं
नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ ९ ॥

कल्याणशीले वशिन्यादिगेहात्परं भ्राजमानानि दिव्यास्त्रवृन्दानि
चापद्वयं चैक्षवं पौष्पमस्त्रं च पाशद्वयं चाङ्कुशद्वन्द्वकं
लोकपित्रोः सदाहं नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ १० ॥

हराङ्के वसन्तीं त्रिकोणेऽष्टमेऽस्मिन् सुसिद्धिप्रदे चक्रराजे मनोज्ञे च कामेश्वरीवज्र
नाथाभगेशीभिरब्जातहस्तेषु चापं शरं पानपात्रं कृपाणं यथा मातुलिङ्गं च

घण्टामणिं कपालं वहन्तीभिरत्यन्ततुल्याभिरेताभिरीढ्यां पुरांबां च चक्राधिनाथां
स्वहस्तेन बीजाख्यमुद्रा वहन्तीं नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ ११ ॥

लक्ष्मीशवागीशवन्द्य त्रिकोणे च मित्रेशनाधादिनाथान् गुरूश्चापि
दिव्यौघसिद्धौघमर्त्यौघवृन्दं च सालोक्यसारूप्यसायुज्यसिद्धिंगतं देवि भक्त्या
नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ १२ ॥

ह्रींबीजगम्ये ततो देवि घिष्ण्ये कलासंख्यकास्ताश्च नित्यस्वरूपाश्च
कामेश्वरीमुख्यदेवीः समाना नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ १३ ॥

सत्यस्वरूपस्य बिन्दोः समीपे सदा रक्षणार्थं धृतास्त्राः
सुवेषाः सदा जागरूकाः षडङ्गाधिदेवीः सुलावण्यपूर्णा
नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ १४ ॥

कलानाथवक्त्रां जलाधारकेशीं झषद्वन्द्वनेत्रां पिनाकाभचिल्लीं सितार्धेन्दुफालां
सुमाकारनासां सुबिम्बोष्ठरम्यां कदम्बद्विजालिं कनत्कम्बुकण्ठीं लताबाहुयुक्तांकु
लागस्तनद्वन्द्वसंशोभमानां वलीशोभमानां वलग्ने परोक्षां
सुरम्भोरुशोभत्रिकोणस्य मध्ये सदानन्दपीठे शिवाङ्के लसन्तीं
त्रिखण्डाख्यमुद्रायुतां चक्रराज्ञीं महाभैरवीं तां नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना
॥ १५ ॥

लसद्रक्तसिन्दूरवर्णां कराब्जैः सुपाशं च कोदण्डमिक्षुप्रकाण्डं सुमास्त्रं तथा
चाङ्कुशं धारयन्तीं कृपापूर्णलावण्यनेत्रान्तरम्यां सुधास्यन्दिनिक्वाणवाग्जन्मभूमिं
सुमास्त्रस्य शास्त्रार्थसारैकनाडीं नतानां जनानां समस्तप्रदात्रीं नवाणां
पुराणामधीशां सुगात्रीं जगद्रक्षणे दक्षबाहालताढ्यां नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि
स्वमूर्ध्ना ॥ १६ ॥

ह्रींकारयुक्तेन मन्त्रेण नित्यं भवत्पादुकां ये स्मरन्ती स्वबुद्ध्या न तेषां
जरामृत्युदारिद्र्यपीडा च तेषां हि संदर्शमात्रेण सर्वाः प्रबाधाः प्रणश्यन्ति

सत्यं त्रिसत्यं च सत्यं कृतार्थाश्च ते मुक्तिभाजो हि ये वा महाराज्ञि चित्ताम्बुजे
त्वां सदा धारयन्तीह श्रीचक्रसाम्राज्ञि भक्त्या नमामि स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना
॥ १७॥

श्रींकारमन्त्राब्जशृङ्गारहंसीं नृपोक्तिप्रपञ्चान्तसिद्धान्तवल्लीं
लसद्भृङ्गनीलालकश्रेणिरम्यां सदा भक्तिनम्रेण चित्तेन गम्यां हराङ्के हरेर्वक्षसि
ब्रह्मवक्त्रे त्रिधारूपसंपत्तिविभ्राजमानां चिदानन्दवल्लीं तुरीयां परेशीं
जगत्सृष्टिसंरक्षणाकर्षकर्त्रीं गुणातीतरूपां गुणैश्चापि युक्तां महामन्त्ररूपां
महापीठरूपां महाशक्तिरूपां महानन्दरूपां नमामि
स्वमूर्ध्ना नमामि स्वमूर्ध्ना ॥ १८॥

॥ इति श्रीचक्रराजवर्णनं संपूर्णम्॥

मन्त्रमातृकापुष्पमालास्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्लोलोल्लसितामृताब्धिलहरीमध्ये विराजन्मणिद्वीपे
कल्पकवाटिकापरिवृते कादम्बवाट्युज्ज्वले।
रत्नस्तम्भसहस्रनिर्मितसभामध्ये विमानोत्तमे
चिन्तारत्नविनिर्मितं जननि ते सिंहासनं भावये ॥ १ ॥

एणाङ्कानलभानुमण्डललसच्छ्रीचक्रमध्ये स्थितां
बालार्कद्युतिभासुरां करतलैः पशाङ्कुशौ बिभ्रतीम्।
चापं बाणमपि प्रसन्नवदनां कौसुम्भवस्त्रान्वितां
तां त्वां चन्द्रकलावतंसमुकुटां चारुस्मितां भावये ॥ २ ॥

ईशानादिपदं शिवैकफलदं रत्नासनं ते शुभं
पाद्यं कुङ्कमचन्दनादिभरितैरर्घ्यं सरत्नाक्षतैः।
शुद्धैराचमनीयकं तव जलैर्भक्त्या मया कल्पितं
कारुण्यामृतवारिधे तदखिलं संतुष्टये कल्पताम् ॥ ३ ॥

लक्ष्ये योगिजनस्य रक्षितजगज्जाले विशालेक्षणे
प्रालेयाम्बुपटीरकुङ्कमलसत्कर्पूरमिश्रोदकैः।
गोक्षीरैरपि नारिकेलसलिलैः शुद्धोदकैर्मन्त्रितैः
स्नानं देवि धिया मयैतदखिलं संतुष्टये कल्पताम् ॥ ४ ॥

ह्रींकाराङ्कितमन्त्रलक्षिततनो हेमाचलात्संचितैः
रत्नैरुज्ज्वलमुत्तरीयसहितं कौसुम्भवर्णांशुकम्।
मुक्तासंततियज्ञसूत्रममलं सौवर्णतंतूद्भवं दत्तं
देवि धिया मयैतदखिलं संतुष्टये कल्पताम् ॥ ५ ॥

हंसैरप्यतिलोभनीयगमने हारावलीमुज्ज्वलां
हिन्दोलद्युतिहीरपूरिततरे हेमाङ्गदे कङ्कणे।
मञ्जीरौ मणिकुण्डले मुकुटमप्यर्धेन्दुचूडामणिं
नासामौक्तिकमङ्गुलीयकटकौ काञ्चीमपि स्वीकुरु ॥ ६ ॥

सर्वाङ्गे घनसारकुङ्कुमघनश्रीगन्धपङ्काङ्कितं
कस्तूरीतिलकं च फालफलके गोरोचनापत्रकम्।
गण्डादर्शनमण्डले नयनयोर्दिव्याञ्जनं तेऽञ्चितं
कंठाब्जे मृगनाभिपङ्कममलं त्वत्प्रीतये कल्पताम् ॥ ७ ॥

कल्हारोत्पलमल्लिकामरुबकैः सौवर्णपङ्केरुहैः
जातीचम्पकमालतीबकुलकैर्मन्दारकुन्दादिभिः।
केतक्या करवीरकैर्बहुविधैः क्लुप्ताः स्रजोमालिकाः
संकल्पेन समर्पयामि वरदे संतुष्टये गृह्यताम् ॥ ८ ॥

हन्तारं मदनस्य नन्दयसि यैरङ्गैरनङ्गोज्ज्वलै-
र्यैर्भृङ्गा वलिनीलकुन्तलभरैर्बध्नासि तस्याशयम्।
तानीमानि तवाम्ब कोमलतराण्यामोदलीलागृहा-
ण्यामोदाय दशाङ्गगुग्गुलुवृतैर्धूपैरहं धूपये ॥ ९ ॥

लक्ष्मीमुज्ज्वलयामि रत्ननिवहोद्भास्वत्तरे मान्दरे
मालारूपविलम्बितैर्मणिमयस्तम्भेषु संभावितैः।
चित्रैर्हाटकपुत्रिकाकरधृतैर्गव्यैर्घृतैर्वर्धितै-
र्दिव्यैर्दीपगणैर्धिया गिरिसुते संतुष्टये कल्पताम् ॥ १० ॥

ह्रींकारेश्वरि तप्तहाटककृतैः स्थालीसहस्रैर्भृतं
दिव्यान्नं घृतसूपशाकभरितं चित्रान्नभेदं तथा।
दुग्धान्नं मधुशर्करादधियुतं माणिक्यपात्रे स्थितं
माषापूपसहस्रमम्ब सफलं नैवेद्यमावेदये ॥ ११ ॥

सच्छायैर्वरकेतकीदलरुचा ताम्बूलवल्लीदलैः
पूगैर्भूरिगुणैः सुगन्धिमधुरैः कर्पूरखण्डोज्ज्वलैः।
मुक्ताचूर्णविराजितैर्बहुविधैर्वक्राम्बुजामोदनैः
पूर्णा रत्नकलाचिका तव मुदे न्यस्ता पुरस्तादुमे ॥ १२॥

कन्याभिः कमनीयकान्तिभिरलंकारामलारार्तिका
पात्रे मौक्तिकचित्रपङ्क्तिविल सत्कर्पूरदीपावलिः।
तत्तत्तालमृदङ्गगीतसहितं नृत्यत्पदाम्भोरुहं
मन्त्राराधनपूर्वकं सुविहितं नीराजनं गृह्यताम् ॥ १३॥

लक्ष्मीमौंक्तिकलक्षकल्पितसितच्छत्रं तु धत्ते रसा-
दिन्द्राणी च रतिश्च चामरवरे धत्ते स्वयं भारती।
वीणामेणविलोचनाः सुमनसां नृत्यन्ति तद्रागव-
द्भावैरांगिकसात्विकैः स्फुटरसं मातस्तदाकर्ण्यताम् ॥ १४॥

ह्रींकारत्रयसंपुटेन मनुनोपास्ये त्रयीमौंलिभि
र्वाक्यैर्लक्ष्यतनो तव स्तुतिविधौ को वा क्षमेताम्बिके।
सँल्लापाः स्तुतयः प्रदक्षिणशतं संचार एवास्तु ते
संवेशो मनसः सहस्रमखिलं त्वत्प्रीतये कल्पताम् ॥ १५॥

श्रीमंत्राक्षरमालया गिरिसुतां यः पूजयेच्चेतसा
संध्यासु प्रतिवासरं सुनियतस्तस्यामलं स्यान्मनः।
चित्ताम्भोरुहमण्डपे गिरिसुता नृत्तं विधत्तेरसात्
वाणी वक्त्रसरोरुहे जलधिजा गेहे जगन्मङ्गला ॥ १६॥

इति गिरिवरपुत्रीपादराजीवभूषा भुवनममलयन्ती सूक्तिसौरभ्यसारैः।
शिवपदमकरन्दस्यन्दिनीयं निबद्धा मदयतु कविभृङ्गान्मातृकापुष्पमाला॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यश्रीमच्छंकराचार्यकृतौ मंत्रमातृकापुष्पमालास्तवः संपूर्णः॥

श्रीत्रिपुरसुन्दरीषोडशोपचारपूजा स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्पलतादिसुरद्रुमवाटीकल्पितरत्नगृहाधिनिवासाम्।
कल्पशतार्जितपुण्यविशेषाच्चेतसि भावनयाहमुपासे ॥ १ ॥

एणधराश्मकृतोन्नतधिष्ण्यं हेमविनिर्मितपादमनोज्ञम्।
शोणशिलाफलकं च विशालं देवि सुखासनमद्य ददामि ॥ २ ॥

ईशमनोहररूपविलासे शीतलचन्दनकुङ्कुममिश्रम्।
हृद्यसुवर्णघटे परिपूर्णं पाद्यमिदं त्रिपुरेशि गृहाण ॥ ३ ॥

लब्धभवत्करुणोऽहमिदानीं रक्तसुमाक्षतयुक्तमनर्घम्।
रुक्मविनिर्मितपात्रविशेषेष्वर्घ्यमिदं त्रिपुरेशि ददामि ॥ ४ ॥

ह्रीमिति मन्त्रजपेन सुगम्ये हेमलतोज्ज्वलदिव्यशरीरे।
योगिमनःसमशीतजलेन ह्याचमनं त्रिपुरेऽद्य विधेहि ॥ ५ ॥

हस्तलसत्कटकादिसुभूषा आदरतोऽम्ब वरोप्यनिधाय।
चन्दनवासितमन्त्रिततोयैः स्नानमयि त्रिपुरेशि विधेहि ॥ ६ ॥

सञ्चितमम्ब मया ह्यतिमूल्यं कुङ्कुमशोणमतीव मृदु त्वम्।
शङ्करतुङ्गतराङ्कनिवासे वस्त्रयुगं त्रिपुरे परिधेहि ॥ ७ ॥

कन्दलदंशुकिरीटमनर्घं कङ्कणकुण्डलनूपुरहारम्।
अङ्गदमङ्गुलिभूषणमम्ब स्वीकुरु देवि पुराधिनिवासे ॥ ८ ॥

हस्तलसच्चतुरायुधजाले शस्ततरं मृगनाभिसमेतम्।
सद्घनसारसुकुङ्कुममिश्रं चन्दनपङ्कमिदं च गृहाण ॥ ९॥

लब्धविकासकदम्बकजातीचम्पकपङ्कजकेतकयुक्तैः।
पुष्पचयैर्मनसावचितैस्त्वामम्ब पुरेशि भवानि भजामि ॥ १०॥

ह्रींपदशोभिमहामनुरूपे धूरसिमन्त्रवरेण मनोज्ञम्।
अष्टसुगन्धरजःकृतमाद्ये धूपमिदं त्रिपुरेशि ददामि ॥ ११॥

सन्तमसापहमुज्ज्वलपात्रे गव्यघृतैः परिवर्धितदेहम्।
चम्पककुड्मलवृन्दसमानं दीपगणं त्रिपुरेऽद्य गृहाण ॥ १२॥

कल्पितमद्य धियाऽमृतकल्पं दुग्धसितायुतमन्नविशेषम्।
माषविनिर्मितपूपसहस्त्रं स्वीकुरु देवि निवेदनमाद्ये ॥ १३॥

लङ्घितकेतकवर्णविशेषैः शोधितकोमलनागदलैश्च।
मौक्तिकचूर्णयुतैः क्रमुकाद्यैः पूर्णतराम्ब पुरस्तव पात्री ॥ १४॥

ह्रींत्रयपूरितमन्त्रविशेषं पञ्चदशीमपि षोडशरूपम्।
सञ्चितपापहरं च जपित्वा मन्त्रसुमाञ्जलिमम्ब ददामि ॥ १५॥

श्रींपदपूर्णमहामनुरूपे श्रीशिवकाममहेश्वरजाये।
श्रीगुहवन्दितपादपयोजे श्रीललितापरमेशि नमस्ते ॥ १६॥

॥ इति श्रीत्रिपुरसुन्दरीषोडशोपचारपूजास्तोत्रम् संपूर्णम्॥

श्रीत्रिपुरसुन्दरी मूलमन्त्रात्मक चक्रराजस्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कर्तुं देवि! जगद्विलासविधिना सृष्टेन ते मायया
सर्वानन्दमयेन मध्यविलसच्छ्रीबिन्दुनालंकृतम्।
श्रीमत्सद्गुरुपूज्यपादकरुणा संवेद्यतत्वात्मकं
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ १ ॥

एकस्मिन्नणिमादिभिर्विलसितं भूमीगृहे सिद्धिभिः
ब्राह्म्याद्याभिरुपाश्रितं च दशभिर्मुद्राभिरुद्भासितम्।
चक्रेश्या प्रकटेड्यया त्रिपुरया त्रैलोक्यसंमोहनं
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ २ ॥

ईड्याभिर्नवविद्रुमच्छविसमाभिख्याभिरङ्गीकृतं
कामाकर्षणिकादिभिः स्वरदले गुप्ताभिधाभिः सदा।
सर्वाशापरिपूरके परिलसद्देव्या पुरेश्या युतं
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ ३ ॥

लब्ध्प्रोज्वलयौवनाभिरभितोऽनङ्गप्रसूनादिभिः
सेव्यं गुप्ततराभिरष्टकमले संक्षोभकाख्ये सदा।
चक्रेश्या पुरसुन्दरीति जगति प्रख्यातया संगतं
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ ४ ॥

ह्रींकाराङ्कितमन्त्रराजनिलयं श्रीसर्वसंक्षोभिणी
मुख्याभिश्चलकुन्तलाभिरुषितं मन्वस्रचक्रे शुभे।
यत्र श्रीपुरवासिनी विजयते श्रीसर्वसौभाग्यदे
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ ५ ॥

हस्ते पाशगदादिशस्त्रनिचयं दीप्तं वहन्तीभिः
उत्तीर्णाख्याभिरुपास्यया।ऽतिशुभदे सर्वार्थसिद्धिप्रदे।
चक्रे बाह्यदशारके विलसितं देव्या पुरश्र्याख्यया
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ ६ ॥

सर्वज्ञादिभिरिन्दुकान्तिधवला काराभिरारक्षिते
चक्रेऽन्तर्दशकोणेऽतिविमले नाम्ना च रक्षाकरे।
यत्र श्रीपुरमालिनी विजयते नित्यं निगर्भास्तुता
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ ७ ॥

कर्तुं मूकमनर्गलस्त्रवदतिद्राक्षादिवाग्वैभवं
दक्षाभिर्वशिनीमुखाभिरभितो वाग्देवताभिर्युतम्।
अष्टारे पुरसिद्धया विलसितं रोगप्रणाशे शुभे
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ ८ ॥

हन्तुं दानवसङ्गमाहवभुवि स्वेच्छासमाकल्पितैः
शस्त्रैरस्त्रचयैश्च चापनिवहैरत्युग्रतेजोभरैः।
आर्तत्राणपरायणैररिकुलप्रध्वंसिभिः संवृतं
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ ९ ॥

लक्ष्मीवागगजादिभिः करलसत्पाशासिघण्टादिभिः
कामेश्यादिभिरावृतं शुभकरं श्रीसर्वसिद्धिप्रदम्।
चक्रेशी च पुराम्बिका विजयते यत्र त्रिकोणे मुदा
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ १० ॥

ह्रीङ्कारं परमं जपद्भिरनिशं मित्रेशनाथादिभिः
दिव्यौघैर्मनुजौघसिद्धनिवहैः सारूप्यमुक्तिं गतैः।
नानामन्त्ररहस्यविद्भिरखिलैरन्वासितं योगिभिः
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ ११ ॥

सर्वोत्कृष्टवपुर्धराभिरभितो देवीसमाभिर्जगत्
संरक्षार्थमुपागताऽभिरसकृन्नित्याभिधाभिर्मुदा।
कामेश्यादिभिराज्ञयैव ललितादेव्याः समुद्भासितं
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ १२॥

कर्तुं श्रीललिताङ्गरक्षणविधिं लावण्यपूर्णां तनूं
आस्थायास्त्रवरोल्लसत्करपयोजाताभिरध्यासितम्।
देवीभिर्हृदयादिभिश्च परितो बिन्दुं सदाऽऽनन्ददं
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ १३॥

लक्ष्मीशादिपदैर्युतेन महता मञ्चेन संशोभितं
षट्त्रिंशद्भिरनर्घरत्नखचितैः सोपानकैर्भूषितम्।
चिन्तारत्नविनिर्मितेन महता सिंहासनेनोज्ज्वलं
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ १४॥

ह्रीङ्कारैकमहामनुं प्रजपता कामेश्वरेणोषितं
तस्याङ्के च निषण्णया त्रिजगतां मात्रा चिदाकारया।
कामेश्या करुणारसैकनिधिना कल्याणदात्र्या युतं
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ १५॥

श्रीमत्पञ्चदशाक्षरैकनिलयं श्रीषोडशीमन्दिरं
श्रीनाथादिभिरर्चितं च बहुधा देवैः समाराधितम्।
श्रीकामेशरहस्यवीनिलयनं श्रीमद्गुहाराधितं
श्रीचक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ १६॥

॥ इति श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीचक्रराजस्तवः संपूर्णः ॥

श्रीराजराजेश्वरी मन्त्रमातृकास्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणायुतपूर्णचन्द्रवदनां प्राणेश्वरानन्दिनीं
पूर्णां पूर्णतरां परेशमहिषीं पूर्णामृतास्वादिनीम्।
सम्पूर्णां परमोत्तमामृतकलां विद्यावतीं भारतीं
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥१॥

एकारादिसमस्तवर्णविविधाकारैकचिद्रूपिणीं
चैतन्यात्मकचक्रराजनिलयां चन्द्रान्तसञ्चारिणीम्।
भावाभावविभाविनीं भवपरां सद्भक्तिचिन्तामणिं
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥२॥

ईहाधिक्परयोगिवृन्दविदितां स्वानन्दभूतां परां (var ईशाधीशत्रयोगि)
पश्यन्ति तनुमध्यमां विलसिनीं श्रीवैखरीरूपिणीम्।
आत्मानात्मविचारिणीं विवरगां विद्यां त्रिबीजात्मिकां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥३॥

लक्ष्यालक्ष्यनिरीक्षणां निरुपमां रुद्राक्षमालाधरां
त्र्यक्षार्धाकृतिदक्षवंशकलिकां दीर्घाक्षिदीर्घस्वरम्।
भद्रां भद्रवरप्रदां भगवतीं भद्रेश्वरीं मुद्रिणीं
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥४॥

ह्रींबीजागतनादबिन्दुभरितां ॐकारनादात्मिकां
ब्रह्मानन्दघनोदरीं गुणवतीं ज्ञानेश्वरीं ज्ञानदाम्।
ज्ञानेच्छाकृतिनीं महीं गतवतीं गन्धर्वसंसेवितां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥५॥

हर्षोन्मत्तसुवर्णपात्रभरितां पीनोन्नताघूर्णितां
हुङ्कारप्रियशब्दजालनिरतां सारस्वतोल्लासिनीम्।
सारासारविचारचारुचतुरां वर्णाश्रमाकारिणीं
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥६॥

सर्वेशाङ्गविहारिणीं सकरुणां सन्नादिनीं नादिनीं
संयोगप्रियरूपिणीं प्रियवतीं प्रीतां प्रतापोन्नताम्।
सर्वान्तर्गतिशालिनीं शिवतनूसन्दीपिनीं दीपिनीं (var सर्वान्तरगत)
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥७॥

कर्माकर्मविवर्जितां कुलवतीं कर्मप्रदां कौलिनीं
कारुण्याम्बुधिसर्वकामनिरतां सिन्धुप्रियोल्लासिनीम्।
पञ्चब्रह्मसनातनासनगतां गेयां सुयोगान्वितां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥८॥

हस्त्युत्कुम्भनिभस्तनद्वितयतः पीनोन्नतादानतां
हाराद्याभरणां सुरेन्द्रविनुतां शृङ्गारपीठालयाम्।
योन्याकारकयोनिमुद्रितकरां नित्यां नवार्णात्मिकां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥९॥

लक्ष्मीलक्षणपूर्णभक्तवरदां लीलाविनोदस्थितां
लाक्षारञ्जितपादपद्मयुगलां ब्रह्मेन्द्रसंसेविताम्।
लोकालोकितलोककामजननीं लोकाश्रयाङ्कस्थितां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥१०॥

ह्रीङ्काराश्रितशङ्करप्रियतनुं श्रीयोगपीठेश्वरीं
माङ्गल्यायुतपङ्कजाभनयनां माङ्गल्यसिद्धिप्रदाम्।
तारुण्येन विशेषिताङ्गसुमहालावण्यसंशोभितां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥११॥

सर्वज्ञानकलावतीं सकरुणां सर्वेश्वरीं सर्वगां।
सत्यां सर्वमयीं सहस्रदलजां सत्त्वार्णवोपस्थिताम्।
सङ्गासङ्गविवर्जितां सुखकरीं बालार्ककोटिप्रभां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥ १२ ॥

कादिक्षान्तसुवर्णबिन्दुसुतनुं सर्वाङ्गसंशोभितां
नानावर्णविचित्रचित्रचरितां चातुर्यचिन्तामणिम्।
चित्तानन्दविधायिनीं सुचपलां कूटत्रयाकारिणीं
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥ १३ ॥

लक्ष्मीशानविधीन्द्रचन्द्रमकुटाद्यष्टाङ्गपीठाश्रितां
सूर्येन्द्वग्निमयैकपीठनिलयां त्रिस्थां त्रिकोणेश्वरीम्।
गोप्त्रीं गर्वनिगर्वितां गगनगां गङ्गाङ्गणेशप्रियां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥ १४ ॥

ह्रींकूटत्रयरूपिणीं समयिनीं संसारिणीं हंसिनीं
वामाचारपरायणीं सुकुलजां बीजावतीं मुद्रिणीम्। (var वामाराध्यपदाम्बुजां)
कामाक्षीं करुणार्द्रचित्तसहितां श्रीं श्रीत्रिमूर्त्यम्बिकां
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरां श्रीराजराजेश्वरीम् ॥ १५ ॥

या विद्या शिवकेशवादिजननी या वै जगन्मोहिनी
या ब्रह्मादिपिपीलिकान्तजगदानन्दैकसन्दायिनी।
या पञ्चप्रणवद्विरेफनलिनी या चित्कलामालिनी
सा पायात्परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥ १६ ॥

॥ अनेन श्रीराजराजेश्वरी मन्त्रमातृकास्तहवश्लोकपठनपारायणैश्च
भगवती सर्वात्मिका श्रीराजराजेश्वरी पादारविन्दार्पणमस्तु ॥

श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीवेदसारस्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कस्तूरीपङ्कभास्वद्गलचलदमलस्थूलमुक्तावलीका
ज्योत्स्नाशुद्धावदाता शशिशिशुमुकुटालंकृता ब्रह्मपत्नी ।
साहित्याम्भोजभृङ्गी कविकुलविनुता सात्विकीं वाग्विभूतिं
देयान्मे शुभ्रवस्त्रा करचलवलया वल्लकीं वादयन्ती ॥ ॥ १ ॥

एकान्ते योगिवृन्दैः प्रशमितकरणैः क्षुत्पिपासाविमुक्तैः
सानन्दं ध्यानयोगाद्बिसगुणसदृशी दृश्यते चित्तमध्ये ।
या देवी हंसरूपा भवभयहरणं साधकानां विधत्ते
सा नित्यं नादरूपा त्रिभुवनजननी मोदमाविष्करोतु ॥ ॥ २ ॥

ईक्षित्री सृष्टिकाले त्रिभुवनमथ या तत्क्षणेऽनुप्रविश्य
स्थेमानं प्रापयन्ती निजगुणविभवैः सर्वथा व्याप्य विश्वम् ।
संहर्त्री सर्वभासां विलयनमसमये स्वात्मनि स्वप्रकाशा
सा देवी कर्मबन्धं मम भवकरणं नाशयत्वादिशक्तिः ॥ ॥ ३ ॥

लक्ष्या या चक्रराजे नवपुरलसिते योगिनीवृन्दगुप्ते
सौवर्णे शैलश‍ृङ्गे सुरगणरचिते तत्त्वसोपानयुक्ते ।
मन्त्रिण्या मेचकाङ्ग्या कुचभरनतया कोलमुख्या च सार्धं
साम्राज्ञी सा मदीया मदगजगमना दीर्घमायुस्तनोतु ॥ ॥ ४ ॥

ह्रीङ्काराम्भोजभृङ्गी हयमुखविनुता हानिवृद्ध्यादिहीना
हंसोऽहंमन्त्रराज्ञी हरिहयवरदा हादिमन्त्रार्थरूपा ।
हस्ते चिन्मुद्रिकाढ्या हतबहुदनुजा हस्तिकृत्तिप्रिया मे
हार्दं शोकातिरेकं शमयतु ललिताधीश्वरी पाशहस्ता ॥ ॥ ५ ॥

हस्ते पङ्केरुहाभे सरससरसिजं बिभ्रती लोकमाता
क्षीरोदन्वत्सुकन्या करिवरविनुता नित्यपुष्टाब्जगेहा।
पद्माक्षी हेमवर्णा मुररिपुदयिता शेवधिः सम्पदां या
सा मे दारिद्र्यदोषं दमयतु करुणादृष्टिपातैरजस्रम्॥ ॥ ६ ॥

सच्चिद्ब्रह्मस्वरूपां सकलगुणयुतां निर्गुणां निर्विकारां
रागद्वेषादिहन्त्रीं रविशशिनयनां राज्यदानप्रवीणाम्।
चत्वारिंशत्त्रिकोणे चतुरधिकसमे चक्रराजे लसन्तीं
कामाक्षीं कामितानां वितरणचतुरां चेतसा भावयामि॥ ॥ ७ ॥

कन्दर्पे त्रिनयननयनज्योतिषा देववृन्दैः
साशङ्कं साश्रुपातं सविनयकरुणं याचिता कामपत्न्या।
या देवी दृष्टिपातैः पुनरपि मदनं जीवयामास सद्यः
सा नित्यं रोगशान्त्यै प्रभवतु ललिताधीश्वरी चित्प्रकाशा॥ ॥ ८ ॥

हव्यैः कव्यैश्च सर्वैः श्रुतिचयविहितैः कर्मभिः कर्मशीला
ध्यानाद्यैरष्टभिश्च प्रशमितकलुषा योगिनः पर्णभक्षाः।
यामेवानेकरूपां प्रतिदिनमवनौ संश्रयन्ते विधिज्ञाः
सा मे मोहान्धकारं बहुभवजनितं नाशयत्वादिमाता॥ ॥ ९ ॥

लक्ष्या मूलत्रिकोणे गुरुवरकरुणालेशतः कामपीठे
यस्या विश्वं समस्तं बहुतरविततं जायते कुण्डलिन्याः।
यस्याः शक्तिप्ररोहादविरलममृतं विन्दते योगिवृन्दं
तां वन्दे नादरूपं प्रणवपदमयीं प्राणिनां प्राणदात्रीम्॥ ॥ १० ॥

ह्रीङ्काराम्भोधिलक्ष्मीं हिमगिरितनयामीश्वरीमीश्वराणां
ह्रींमन्त्राराध्यदेवीं श्रुतिशतशिखरैर्मृग्यमाणां मृगाक्षीम्।
ह्रींमन्त्रान्तैस्त्रिकूटैः स्थिरतरमतिभिर्धार्यमाणां ज्वलन्तीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीमित्यजस्रं हृदयसरसिजे भावयेऽहं भवानीम्॥ ॥ ११ ॥

सर्वेषां ध्यानमात्रात्सवितुरुदरगा चोदयन्ती मनीषां
सावित्री तत्पदार्था शशियुतमुकुटा पञ्चशीर्षा त्रिनेत्रा।
हस्ताग्रैः शङ्खचक्राद्यखिलजनपरित्राणदक्षायुधानां
बिभ्राणा वृन्दमम्बा विशदयतु मतिं मामकीनां महेशी॥ ॥ १२॥

कर्त्रीं लोकस्य लीलाविलसितविधिना कारयित्री क्रियाणां
भर्त्री स्वानुप्रवेशाद्वियदनिलमुखैः पञ्चभूतैः स्वसृष्टैः।
हर्त्री स्वेनैव धाम्ना पुनरपि विलये कालरूपं दधाना
हन्यादामूलमस्मत्कलुषभरमुमा भुक्तिमुक्तिप्रदात्री॥ ॥ १३॥

लक्ष्या या पुण्यजालैर्गुरुवरचरणाम्भोजसेवाविशेषाद्
दृश्या स्वान्ते सुधीभिर्दरदलितमहापद्मकोशेन तुल्ये।
लक्षं जप्त्वापि यस्या मनुवरमणिमासिद्धिमन्तो महान्तः
सा नित्यं मामकीने हृदयसरसिजे वासमङ्गीकरोतु॥ ॥ १४॥

ह्रींश्रीमैंमन्त्ररूपा हरिहरविनुताऽगस्त्यपत्नीप्रदिष्टा
हादिः काद्यर्णतत्वा सुरपतिवरदा कामराजप्रदिष्टा।
दुष्टानां दानवानां मदभरहरणा दुःखहन्त्री बुधानां
साम्राज्ञी चक्रराज्ञी प्रदिशतु कुशलं मह्यमोङ्काररूपा॥ ॥ १५॥

श्रीमन्त्रार्थस्वरूपा श्रितजनदुरितध्वान्तहन्त्री शरण्या
श्रौतस्मार्तक्रियाणामविकलफलदा फालनेत्रस्य दाराः।
श्रीचक्रान्तर्निषण्णा गुहवरजननी दुष्टहन्त्री वरेण्या
श्रीमत्सिंहासनेशी प्रदिशतु विपुलां कीर्तिमानन्दरूपा॥ ॥ १६॥

श्रीचक्रवरसाम्राज्ञी श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी।
श्रीगुहान्वयसौवर्णदीपिका दिशतु श्रियम्॥

॥ इति श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीवेदसारस्तवः संपूर्णः॥

श्रीत्रिपुरसुन्दरीपुष्पाञ्जलिस्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणदात्रि कमनीयतनूलते त्वां
कं चापि कालमनुचिन्त्य हृदब्जमध्ये।
कामं प्रहर्षभरितेन मया तवाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ १ ॥

एतन्मदीयसुकृतं परमं पुराणं
यत्वामहं प्रतिदिनं मनसा भजामि।
साक्षात्कृतेन तव रूपमनेन चाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥२॥

ईशादिदेवमहनीयमहानुभावे
दीनं त्विमं भवभयेन परिस्फुरन्तम्।
दीनार्तिहन्त्रि दयया परिपालयाशु
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ ३ ॥

लज्जां विहाय बहुधा बहवोऽपि देवाः
संपूजिता जडधिया नतु कोऽपि दृष्टः।
लब्धं तवैव रमणीयवपुर्दृशा मे
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ ४॥

ह्रींकारमन्त्रनिलये बहुशो भवाब्धौ
मग्नः परं तु न कदापि गतोऽस्मिपारम्।
तत्तारणे निपुणयोस्त्रिपुरे मयाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥५॥

हस्तेषु पाशमहनीयसितेक्षुचापे
पुष्पास्त्रमङ्कुशवरं ललितं दधाने।
हेमाद्रितुङ्गतरशृङ्गनिवासशीले
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ ६ ॥

सर्वेषु देवि समायेषु गतिस्त्वमेव
नान्यं कदापि मनसा समनुस्मरामि।
सर्वत्र रूपमतुलं तव पश्यताद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ ७ ॥

कस्ते पुरेशि विधिवत्तु समर्हणायां
शक्तः समस्तपरिबर्हयुतोऽपि धीमान्।
हृत्पङ्कजेन भवतीं भजता मयाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ ८ ॥

हन्तातिरूक्षभवपावकशोषितेन
कुत्राप्यलब्धशरणेन सरोजवक्त्रे।
अन्ते मयात्रभवतीं शरणं गतेन
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ ९ ॥

लक्ष्यासि देवि बहुजन्मतपोबलेन
लक्ष्मीशधातृपरिपूज्यपदास्तुजाते।
आलक्ष्य रूपमरुणं तव विस्मितेन
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ १० ॥

ह्रींकरमेव शरणं जगतां वदन्ति
ह्रींकरमेव परमं भुवने रहस्यम्।
ह्रींकारमेव सततं स्मरता मयाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ ११ ॥

सर्वस्य देवि भुवनस्य निदानभूता
त्वय्येव सर्वमनघे विलयं गतं स्यात्।
संचिन्त्य चैतदधुना त्रिपुरे मया ते
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ १२॥

कश्चिद्यदा भवनिहन्त्रि विचिन्तयेत्वां
दीनं तदैव हि कटाक्षयसे दृशा त्वम्।
एवं विचिन्त्य भवतीं स्मरता मयाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ १३॥

लब्ध्वा त्वदीयचरणाम्बुजमम्ब
जन्तुर्नावर्तते पुनरपि प्रभवाय लोके।
वेदोक्तिमेवमसकृत्स्मरता मयाद्य
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ १४॥

ह्रींकारमेव जपता प्रतिवासरं च
ह्रींकारमेव भजता सकलेष्टसिद्ध्यै।
ह्रींकारमेव परमं शरणं गतेन
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ १५॥

श्रींकारमन्त्रकनकाब्जनिवासशीले
श्रीरूपधारिणि शिवे श्रितकल्पवल्लि।
श्रीमद्गुहस्तुतमहाविभवे पुरेशि
पुष्पाञ्जलिश्चरणयोरयमम्ब कीर्णः ॥ १६॥

॥ इति श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीपुष्पाञ्जलिस्तवः संपूर्णः॥

पञ्चदशाक्षरीगुप्तिनर्तनलीलास्तुतिः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

राजराजेश्वरी राक्षसघ्नि स्फुतराकेन्दु मण्डल राजन्मुखि।
राज्याधि भारादि संपत्प्रदायिनि राजत्किरीटिनि पालय माम्॥ ॥ १ ॥
(...इन्दुराजत्किरीटिनि पालय माम्॥)

कल्याणरूप मनोहराङ्गि बहुकल्यंश संभव दोषहरे।
कल्याण शैल धनुर्धर नायिके कल्याणमाशु विधेहि मम॥ ॥ २ ॥
(....नित्यकल्याणमाशु विधेहि मम॥)

एणीविशाल दृगम्बुरुहे निजवेणीसितेतर कुण्डलिनी।
वाणीविलास महावर दायिनी पाणिं प्रदायैवोद्धारय माम्॥ ॥ ३ ॥
(....तव पाणिं प्रदायैवोद्धारय माम्॥)

ईशान पूर्वक ब्रह्ममयि द्रुतमीप्सिता शेष महार्थप्रदे।
ईशान वामाङ्क वासमहारसे ईहामिहाशु विमोचय मे॥ ॥ ४ ॥
(....परमीहामिहाशु विमोचय मे॥)

लक्ष्मी सरस्वत्यु मादियुते सर्वलक्षण प्रोल्लसि ताङ्गयुते।
लक्षकोट्यण्ड समूह विधायिनि लक्ष्यार्थवस्तु प्रदर्शय मे॥ ॥ ५ ॥
(....तत्वलक्ष्यार्थवस्तु प्रदर्शय मे॥)

ह्रींकार पञ्जरमध्ये शुकेश्वरी ह्रींकार जाप प्रसादकरे।
ह्रींपद लक्ष्यार्थ वस्तुस्वरूपिणि ह्रीरस्तु मेऽनात्म वस्तुसुखे॥ ॥ ६ ॥
(....महाह्रीरस्तु मेऽनात्म वस्तुसुखे॥)

हर्यब्ज जन्म त्रिदृग्जननी क्षित्री हर्यश्व पूर्वा मरार्चिताङ्घ्रे।
हर्षिणि श्रीहरि सोदरि शाम्भवि हर्षप्रदा भव मे सततम्॥ ॥७॥
(....महाहर्षप्रदा भव मे सततम्॥)

सर्व चराचर जन्तुद्भव स्थिति संहार कर्तुस्सहायभूते।
संसार चक्र परिभ्रमणादिषु साहाय्यमाशु विधेहि मम॥ ॥८॥
(....नित्यसाहाय्यमाशु विधेहि मम॥)

कल्प लतोपम बाहुयुगे महाकल्पान्त कालैक साक्षिभूते।
कल्पित मिथ्या प्रपञ्च विलासिनि कल्पय मे गति मात्ममयीम्॥ ॥९॥
(....परिकल्पय मे गति मात्ममयीम्॥)

हव्यवहादि कलामयि सज्जनहर्म्य महान्दोलि कादिप्रदे।
हस्ति कुम्भोन्नत वक्षोज शोभिते हत्यादि पाप मिहोच्चाटय॥ ॥१०॥
(....ब्रह्महत्यादि पाप मिहोच्चाटय॥)

लब्धमहा भक्ति योगैक साधने लक्ष्य षडध्वाति क्रान्तरूपे।
लक्ष्मण पूर्वज मुख्यप्रपूजिते लक्ष्मीकुरुष्व माँ त्वं कृपया॥ ॥११॥
(....महालक्ष्मीकुरुष्व माँ त्वं कृपया॥)

ह्रींकार रङ्गस्थलान्तर्महानटि ह्रींकारोद्यानक केकिनीशे।
ह्रींसरसी कलहंसिनि शङ्करि ह्रींपद लक्ष्यार्थमाविष्कुरु॥ ॥१२॥
(....तव ह्रींपद लक्ष्यार्थमाविष्कुरु॥)

सर्गस्थिति प्रलयादि विनिर्मुक्त सच्चिदानन्दैक ब्रह्ममयि।
सत्संप्रदायात्म विद्यास्वरूपिणि सद्वस्तुद्योतय मे सततम्॥ ॥१३॥
(....हृदि सद्वस्तुद्योतय मे सततम्॥)

कर्तृत्व भोक्तृत्व धर्मादि दुरगकूटस्थ चैतन्य साक्षिभूते।
कल्पित वस्त्वधिष्ठानस्वरूपिणि कर्मादिबन्धद्विमोचय माम्॥ ॥१४॥
(....कामकर्मादिबन्धद्विमोचय माम्॥)

लम्बोदरप्रसवित्रि षडाननलब्धपयः पान वक्षोरुहे।
लज्जान्विते शिवशय्यागृहाङ्गणे लक्ष्यं ममास्तु ते पादयुगम्॥ ॥१५॥
(....ध्यानलक्ष्यं ममास्तु ते पादयुगम्॥)

ह्रींकार कल्पमहाद्रुम मञ्जरि ह्रींकार दुग्ध पयोधि सुधे।
ह्रींकार गेहमहारत्न दीपिके ह्रींकार जापेऽस्तु मे रसना॥ ॥१६॥
(....तव ह्रींकार जापेऽस्तु मे रसना॥)

पूर्णविद्येश्वरी श्रीमन्महागुरुपूर्णमहाकरुणासुधया।
पूर्णाद्य गुप्तिः श्री पञ्चदशाक्षरी पूर्णप्रसादं करोतु मम॥ ॥१७॥
(....अतुलपूर्णप्रसादं करोतु मम॥)

पञ्च मुखेशादि देवप्रतोषकपञ्चदशाक्षर गुप्तिमिमम्।
पञ्चाक्षरादि वदुच्चरतामिह पञ्चत्व सम्भवभीतिर्नहि॥ ॥१८॥
(....क्वापि पञ्चत्व सम्भवभीतिर्नहि॥)

गुप्तिनर्तन लीलेयं राजताळसमन्विता।
देवतोत्सववेलायां कारयामास सूरिभिः॥ ॥१९॥

अन्योऽन्यं पादतलेनाघटनं प्रदक्षिणनर्तनं गुप्तिः। कुम्मिः इति द्राविडभाषायाम्।

इति श्री पदवाक्यादिपारदृश्वनो ब्रह्मीभूतकैलासनाथशास्त्रिणः कृतिषु
पञ्चदशाक्षरीगुप्तीस्तुतिः संपूर्णा॥

श्रीत्रिपुरसुन्दरीविजयस्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय ॥

कल्पान्तोदितचण्डभानुविलसद्देहप्रभामण्डिता
कालाम्भोदसमानकुन्तलभरा कारुण्यावारांनिधिः ।
काद्यर्णाङ्कितमन्त्रराजविलसत्कूटत्रयोपासिता
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ १ ॥

एतत्प्राभवशालिनीति निगमैरद्याप्यनालोकिता
हेमाम्भोजमुखी चलत्कुवलयप्रस्पर्धमानेक्षणा ।
एणाङ्कांशसमानफालफलकप्रोल्लासिकस्तूरिका
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ २ ॥

ईषत्फुल्लकदम्बकुड्मलमहालावण्यगर्वापहस्निग्ध
स्वच्छसुदन्तकान्तिविलसन्मन्दस्मितालंकृता ।
ईशित्वाद्यखिलेष्टसिद्धिफलदा भक्त्या नतानां सदा
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ ३ ॥

लक्ष्यालक्ष्यवलग्नदेशविलसद्रोमावलीवल्लरी-
वृत्तस्निग्धफलद्वयभ्रमकरोतुङ्गस्तनी सुन्दरी ।
रक्ताशोकसुमप्रपाटलदुकूलाच्छादिताङ्गी मुदा
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ ४ ॥

ह्रीङ्कारी सुरवाहिनीजलगभीरावर्तनाभिर्घन-
श्रोणीमंडलभारमन्दगमना काञ्चीकलापोज्वला ।
शुण्डादण्डसुवर्णकदलीकाण्डोपमोरुद्वयी
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ ५ ॥

हस्तप्रोज्ज्वलदिक्षुकार्मुकलसत्पुष्पेषुपाशाङ्कुशा
हाद्यर्णाङ्कितमन्त्रराजनिलया हारादिभिर्भूषिता।
हस्तप्रान्तरणत्सुवर्णवलया हर्यक्षसंपूजिता
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ ६ ॥

संरक्ताम्बुजपादयुग्मविलसन्मञ्जुक्वणन्नूपुरा
संसारार्णवकारणैकतरणिर्लावण्यवारांनिधिः।
लीलालोलतमं शुकं मधुरया संलालयन्ती गिरा
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ ७ ॥

कल्याणी करुणारसार्द्रहृदया कल्याणसंदायिनी
काद्यर्णाङ्कितमन्त्रलक्षिततनुस्तन्वी तमोनाशिनी।
कामेशाङ्कविलासिनी कलगिरामावासभूमिः शिवा
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ ८ ॥

हन्तुं दानवपुङ्गवं रणभुवि प्रोच्चण्डामिधं
हर्यक्षाद्यमरार्थिता भगवती दिव्यां तनूमाश्रिता।
श्रीमाता ललितेत्यचिन्त्यविभवैर्नाम्नांसहस्रैः स्तुता
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ ९ ॥

लक्ष्मीवागगजादिभिर्बहुविधै रूपैः स्तुतापि स्वयं
नीरूपा गुणवर्जिता त्रिजगतां माता च चिद्रूपिणी।
भक्तानुग्रहकारणेन ललितं रूपं समासादिता
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ १० ॥

ह्रीङ्कारैपरायणार्तजनतासंरक्षणे दीक्षिता
हार्द संतमसं व्यपोहितुमलंभूष्णुर्हरप्रेयसी।
हत्यादिप्रकटाघसंघदलने दक्षा च दाक्षायणी
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ ११ ॥

सर्वानन्दमयी समस्तजगतामानन्दसंदायिनी
सर्वोत्तुङ्गसुवर्णशैलनिलया सा सारसाक्षी सती।
सर्वैर्योगिचयैः सदैव विचिता साम्राज्यदानक्षमा
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ १२॥

कन्यारूपधरा गलाब्जविलसन्मुक्तालतालङ्कृता
कादिक्षान्तमनुप्रविष्टहृदया कल्याणशीलान्विता।
कल्पान्तोद्भटताण्डवप्रमुदिता श्रीकामजित्साक्षिणी
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ १३॥

लक्ष्या भक्तिरसार्द्रहृत्सरसिजे सद्भिः सदाराधिता
सान्द्रानन्दमयी सुधाकरकलाखण्डोज्ज्वलन्मौलिका।
शर्वाणी शरणागतार्तिशमनी सच्चिन्मयी सर्वदा
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ १४॥

ह्रीङ्कारत्रयसंपुटातिमहता मन्त्रेण संपूजिता
होत्री चन्द्रसमीरणाग्निजलभूभास्वन्नभोरूपिणी।
हंसः सोऽहमिति प्रकृष्टधिषणैराराधिता योगिभिः
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ १५॥

श्रीङ्काराम्बुजहंसिका श्रितजनक्षेमङ्करी शङ्करी
शृङ्गारैकरसाकरस्य मदनस्योज्जीविका वल्लरी।
श्रीकामेशरहःसखी च ललिता श्रीमद्गुहाराधिता
श्रीचक्राधिनिवासिनी विजयते श्रीराजराजेश्वरी ॥ १६॥

॥ इति श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीविजयस्तवः संपूर्णः॥

श्रीत्रिपुरसुन्दरीसान्निध्यस्तवः

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कल्पभानुसमानभास्वरधाम लोचनगोचरं
किं किमित्यतिविस्मिते मयि पश्यतीह समागताम्।
कालकुन्तलभारनिर्जितनीलमेघकुलां पुरः
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ १ ॥

एकदन्तषडाननादिभिरावृतां जगदीश्वरीम्
एनसां परिपन्थिनीमहमेकभक्तिमदर्चिताम्।
एकहीनशतेषु जन्मसु संचितात्सुकृतादिमां
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ २ ॥

ईदृशीति च वेदकुन्तलवाग्भिरप्यनिरूपिताम्
ईशपङ्कजनाभसृष्टिकृदादिवन्द्यपदाम्बुजाम्।
ईक्षणान्तनिरीक्षणेन मदिष्टदां पुरतोऽधुना
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ ३ ॥

लक्षणोज्वलहारशोभिपयोधरद्वयकैतवात्
लीलयैवदयारसस्रवदुज्वलत्कलशान्विताम्।
लाक्षयाङ्कितपादपातिमिलिन्दसन्ततिमग्रतः
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ ४ ॥

ह्रीमिति प्रतिवासरं जपसुस्थिरोऽहमुदारया
योगिमार्गनिरूढयैक्यसुभावनां गतया धिया।
वत्स हर्षमवाप्तवत्यहमित्युदारगिरं पुरः
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ ५ ॥

हंसवृन्दमलक्तकारुणपादपङ्कजनूपुर-
क्वाणमोहितमादरादनुधावितं मृदु श्रृण्वतीम्।
हंसमन्त्रमहार्थतत्वमयीं पुरो मम भाग्यत
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ ६ ॥

सङ्गतं जलमभ्रवृन्दसमुद्भवं धरणीधराद्
धारया वहदञ्जसा भ्रममाप्य सैकतनिर्गतम्।
एवमादिमहेन्द्रजालसुकोविदां पुरतोऽधुना
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ ७ ॥

कम्बुसुन्दरकन्धरां कचवृन्दनिर्जितवारिदां
कण्ठदेशलसत्सुमङ्गलहेमसूत्रविराजिताम्।
कादिमन्त्रमुपासतां सकलेष्टदां मम सन्निधौ
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ॥ ८ ॥

हस्तपद्मलसत्त्रिखण्डसमुद्रिकामहमद्रिजां
हस्तिकृत्तिपरीतकार्मुकवल्लरीसमचिल्लिकाम्।
हर्यजस्तुतवैभवां भवकामिनीं मम भाग्यतः
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ॥ ९ ॥

लक्षणोल्लसदङ्गकान्तिझरीनिराकृतविद्युतं
लास्यलोलसुवर्णकुण्डलमण्डितां जगदम्बिकाम्।
लीलयाखिलसृष्टिपालनकर्षणादिवितन्वतीं
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ॥ १० ॥

ह्रींमिति त्रिपुरामनुस्थिरचेतसा बहुधाऽर्चितां
हादिमन्त्रमहाम्बुजातविराजमानसुहंसिकाम्।
हेमकुम्भघनस्तनाञ्चललोलमौक्तिकभूषणां
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ॥ ११ ॥

सर्वलोकनमस्कृतां जितशर्वरीरमणाननां
शरवदेवनमनःप्रियां नवयौवनोन्मदगर्विताम्।
सर्वमङ्गलविग्रहां मम पूर्वजन्मतपोबला
च्चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ॥ १२॥

कन्दमूलफलाशिभिर्बहु योगिभिश्च गवेषितां
कुन्दकुड्मलदन्तपङ्क्तिविराजितामपराजिताम्।
कन्दमागमवीरुधां सुरसुन्दरीभिरिहागतां
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ॥ १३॥

लत्रयाङ्कितमन्त्रराड्गमलंकृतां जगदम्बिकां
लोलनीलसुकुन्तलावलिनिर्जितालिकदम्बकाम्।
लोभमोहविदारिणीं करुणामयीमरुणां शिवां
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ॥ १४॥

ह्रींपराख्यमहामनोरधिदेवतां भुवनेश्वरीं
हृत्सरोजनिवासिनीं हरवल्लभां बहुरूपिणीम्।
हारकुण्डलनूपुरादिभिरन्वितां पुरतोऽधुना
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ॥ १५॥

श्रीं सुपञ्चदशाक्षरीमपि षोडशाक्षररूपिणीं
श्रीसुधार्णवमध्यशोभिसरोजकाननचन्द्रिकाम्।
श्रीगुहस्तुतवैभवां परदेवतां मम सन्निधौ
चक्रराजनिवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ॥ १६॥

॥ इति श्रीमत्रिपुरसुन्दरीसान्निध्यस्तवः संपूर्णः ॥

श्रीधर्मसंवर्धनीस्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणी कमनीयतूलकबरी कल्हारमालाञ्चिता
कस्तूरीतिलकाङ्कफालफलका कामेश्वरप्रेयसी।
काम्या कामकलात्मिका करलसच्चापेक्षुपाशाङ्कुशा
कल्याणानि करोतु मे भगवती श्रीधर्मसंवर्धनी ॥ १ ॥

एतावत्तदिति प्रमाम् अतिगताम् एणीकिशोरेक्षणाम्
एकान्तापचितिप्रसन्नहृदयाम् एकाधिपत्यप्रदाम्।
एवंभूतचराचरैकजननीम् एणाङ्कचूडप्रियाम्
एधेमह्यधिकं प्रपद्य शरणं श्रीधर्मसंवर्धनीम् ॥ २ ॥

ईशोत्सङ्गविहारलोलहृदयाम् ईहाविहीनाशयाम्
ईडानाखिलवाञ्छितार्थजननीम् ईशानसंसेविताम्।
ईदृग्विश्वजनिस्थितिक्षतिकरीम् ईतिव्यथानाशिनीम्
ईडेऽहं परदेवताम् भगवतीं श्रीधर्मसंवर्धनीम् ॥ ३ ॥

लक्ष्मीवल्लभभारतीपतिशचीपत्यादिसंपूजिता
लब्धानेकजनुःसुकर्मनिचयैर्लभ्यङ्घ्रिसेवारसा।
लावण्यामृतसारसागरतनुर्लक्षागमैर्लक्षिता-
लब्धार्था ललना लसेन्मनसि मे श्रीधर्मसंवर्धनी ॥ ४ ॥

ह्रींकाराम्बुजकर्णिकान्तरमहासिंहासनाध्यासिनी
ह्रीणात्मीकृतसर्वलोकललनारत्नस्वलावण्यभा।
ह्रीश्रीभीधृतिबुद्धिसंस्मृतिरतिश्रद्धाक्षमारूपिणी
ह्रींनामा ममदुःखमाशु हरतु श्रीधर्मसंवर्धनी ॥ ५ ॥

हस्ताहस्तिविधायिपीवरकुचा हस्तीन्द्रकुम्भैः समं
हानादानविवर्जिता हरिमणिश्यामावदातेक्षणा।
हंसाध्येययपदक्रमा हरिहयब्रह्माच्युतेशार्चिता
हन्यान्मे हतकिल्बिषं हरसखी श्रीधर्मसंवर्धनी ॥ ६॥

सर्वाङ्गीणविभूषणा समरसा संविन्मयी सात्विकी
साध्या सागरमेखलाधरसुता सर्वज्ञसंमोहिनी।
सत्यानन्दचिदाकृतिः सरसवाक् सन्तुष्टचित्तास्तु मे
संसारार्णवतारणैकतरणिः श्रीधर्मसंवर्धनी ॥ ७॥

कल्या काञ्चनकुण्डलाङ्गदधरा कण्ठे मणीमालिका
कटयां काञ्चनकाञ्चिदामलसिता कादम्बसञ्चारिणी।
काले कल्पितविश्वसृष्टिविलया कात्यायनी कामदा
कामं मे कठिनस्तनी कलयतु श्रीधर्मसंवर्धनी ॥ ८॥

हत्याद्युत्कटपापकूटदहनज्वालायमानाभिधा
हस्तैर्हाटककङ्कणावलिधरा हंसावलीसेविता।
हारालीपरिशोभमानविपुलप्रोत्तुङ्गवक्षोरुहा
हत्याहन्तृकला निहन्तु मदघं श्रीधर्मसंवर्धनी ॥ ९॥

लब्ध्वव्यालघुलब्धभक्त्यतिशयैर्लास्यप्रिया लाकिनी
लाक्षारञ्जितपादपद्मयुगला लज्जापदार्चाप्रिया।
लाभालाभसमानचित्तमुदिता लङ्केशवैर्यर्चिता
लक्ष्यात्मा ललिता लगेन्मनसि मे श्रीधर्मसंवर्धनी ॥ १०॥

ह्रींकारामलदुग्धसागरसुधा ह्रींकारपद्मेन्दिरा
ह्रींकाराङ्कितमन्त्रजापकजनाभीष्टार्थसन्दायिनी।
ह्रींकारामृतवापिका कमलिनी ह्रींकारपेटीमणिः
क्षिप्रं मद्विषतां कुलं ह्रसययु श्रीधर्मसंवर्धनी ॥ ११॥

सर्वानन्दकरी समस्तजननी सत्कर्मसन्तोषिणी
सव्यासव्यपथार्चिताङ्घ्रिकमला संपूर्णसम्पत्करी।
साध्वी सद्गतिदायिनी सदसदाकारा समा साक्षिणी
सर्वज्ञा मम संक्षिणोतु दुरितं श्रीधर्मसंवर्धनी ॥ १२॥

कन्यापूजनसंप्रहृष्टहृदया कल्पद्रुमूलासिनी
काव्यालापविनोदिनी कलिमलप्रध्वंसिनी कामिनी।
कल्याणाचलकार्मुकप्रियतमा कल्याणशैलालया
कामं कामधुगस्तु मे भगवती श्रीधर्मसंवर्धनी ॥ १३॥

लक्ष्या लक्षणबोधकश्रुतिशिरः सीमन्तवाक्यालिभि-
र्लज्जाढ्या लगदिष्टकल्पलतिका लग्नाशये योगिनाम्।
लक्ष्मीवल्लभसोदरी लयकरी लज्जापदाध्यासिनी
लालित्यैकनिधिर्लगेन्मनसि मे श्रीधर्मसंवर्धनी ॥ १४॥

ह्रींकारामृत भानुमण्डललसज्ज्योत्स्नाभिरामाकृति-
ह्रींकारोदयमेदिनीधरकठोराभीषुबिम्बप्रभा।
ह्रींकारैकपरायणाभिलषिताशेषार्थचिन्तामणि-
र्हृष्येन्मे मधुनायकप्रणयिनी श्रीधर्मसंवर्धनी ॥ १५॥

मधुनाथमनोमोदमकरालयचन्द्रिका।
धर्मसंवर्धनी देवी धर्मे संवर्धयेन्मम॥

॥ इति श्रीगोमतीदासकृतं श्रीधर्मसंवर्धनीस्तोत्रम् संपूर्णम्॥

श्रीमीनाक्षी पञ्चदशी स्तोत्रम्

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कस्मात्पर्वतराजराजतनये त्वत्पादपद्मे नतम्
दीनं मां समुपेक्षसे मम दृशोः भानं कुतो लुप्यते।
को वा त्वत्चरणारविन्दभजनं कुर्वन् कृती भूतले
दारिद्र्यं लभते कथं च जननी दृष्ट्या विहीनो भवेत् ॥ १ ॥

एवं पाण्ड्यनृपात्मजेति भुवने को वा जगन्मातरम्
स्तोतुं त्वां निपुणो महेश्वरी शिवे नाहं समर्थस्ततः।
एतन्न्याय्यमिति त्वमेव मनसा निश्चित्य संगृह्य माम्
चक्षुष्मन्तमथाढ्यमाशुकुरुषे यद्यम्ब माता मम ॥ २ ॥

ईशात्वं सकलार्थ दान निपुणा कर्मानुसारान्नृणाम्
पूर्वं त्वं बहुपाप कर्म कृतवान् एतत्फलं भुज्यताम्।
ईशित्रीति तवाम्बिके भगवति नामार्थशून्यं भवेत्
त्वद्भक्तैः कृतकार्यमत्र सकलं नोचेत्तवाराधनम् ॥ ३ ॥

लक्ष्मीं क्षीरसमुद्रराजतनयां त्वद्भक्तगेहे स्थिराम्
कर्तुं शक्तिरहो तवास्ति जननि गेहे परं मे कुतः।
लक्ष्मीस्थापन मुख्यकार्य विमुका त्वं भासि सर्वेश्वरी
लक्ष्मीं स्थापय शीघ्रमेव भवती चक्षूच्च सन्देहि मे ॥ ४ ॥

ह्रींकारार्णव कौस्तुभां भगवतीं श्रीपाण्ड्यराजात्मजाम्
भक्तत्राण परायणां हरिहरब्रह्मादिवन्द्यां शिवाम्
ह्रींमध्यां त्रिदशेश्वरीं त्रिनयनश्रीतुल्य सौभाग्यदाम्
वन्देहं मम दृष्टिदोष तमसां भेत्रीं परामम्बिकाम् ॥ ५ ॥

हत्वा शुम्भनिशुम्भमुख्यदितिजान् देवेप्सितार्थप्रद
दुर्गा मामकचक्षुषः तिमिरमप्यद्याऽशु विध्वंसयेत्।
हत्वा चाक्षुषदोषमद्यजननी मां पालयेत् बालकम्
तां नित्यं प्रणतोस्म्यहं विनयतः सेवे जगत्पालिनीम् ॥ ६॥

सर्वेशीं निजभक्तकल्पलतिकां कामेश्वरीं कामदाम्
सर्वज्ञां सदसद्विलक्षण जगत्सत्ताप्रदां शाश्वतीम्।
सत्यज्ञान सुखात्मिकां भगवतीं मायामयीं मोहिनीम्
वन्देऽहं मधुरेश्वरीं नयनयोः दिव्यप्रकाशाप्तये ॥ ७॥

कस्त्वं किं फलमिच्छसीति जननीप्रश्ने नकश्चिच्छिवे
वक्तुं त्वां निपुणः त्वमेव चतुरा ज्ञातुं स्वरूपं मम।
कोऽहं ब्रूहि महेश्वरोहं इति वा त्वं वाहमेवाम्बिके
को भेदःशिवयोः तथैव शिवदे जीवेशयोर्वा कथम् ॥ ८॥

हंसीत्वं भुवनेति शङ्करगुरोः वाक्येन जानाम्यहम्
त्वामेवाम्ब ममापिदोषमखिलं कृत्वा गुणं पालय।
हंसस्सोहमितीह मन्त्र जपतः प्रत्यक्षतो दर्शनम्
त्वद्रूपस्य ममाऽपि देहि शिवदे श्रीराजराजेश्वरि ॥ ९॥

लक्ष्मीं देहि सदा ममाऽपि कृपया श्रीपाण्ड्यराजात्मजे
दोषं चाक्षुषमप्यसह्यमेव नितरां दूरीकुरुत्वं शिवे।
लक्ष्मी वाङ्मुखदेवताभिरनिशं संस्तूयमानां पराम्
त्वामेवात्र समाश्रये नहि परा देवी त्रिलोक्यां खलु ॥ १०॥

ह्रीं बीजैः त्रिविधैः शिखासु घटिताः खण्डाः त्रयः शङ्करि
यस्मिन् मन्त्रवरे सचापि मनुराट् यस्याः स्वरूपं शिवे।

ह्रीं मायेति च कथ्यते बुधवरैः या शक्तिराद्यापरा
सा त्वं देवि नमस्करोमि भवतीं देह्यात्मचक्षुः परे ॥ ११ ॥

सर्वे विष्णुमुखाः सुराश्च जननि त्वच्छासने संस्थिताः
तस्माद्देवि नवग्रहाः तव मते स्थित्वैव सौख्यप्रदाः।
सत्येवं मम दुःखमेव बहुधा कुर्वन्ति सूर्योदयः
देवाः त्वत्पदपद्ममेव शरणं प्राप्तोऽस्मि मां पालय ॥ १२ ॥

कष्टं त्वद्भजने निवर्त्तत इति श्रुत्वा भजाम्यंबिके
त्वामेवाद्य तथाऽपि मे नहि सुखं तत्कारणं ब्रूहि मे।
कष्टात्कष्टपरंपरा मम गृहे संवर्धते मानदे
मातुस्ते शिशुपालनात् विमुखता नैवोचिता शाम्भवी ॥ १३ ॥

लाभोयं परमः महेश्वरि शिवे त्वत्पूजने यन्मनः
नित्यं वर्तत इत्यहो भगवति तत्र स्थिरं कुर्विदम्।
लक्ष्मीं वा हरिनाभिपद्मजसखीं नित्यं वशे मे कुरु
मुख्यं मे नयनस्य पाटवमपि त्वं देहि मातः परे ॥ १४ ॥

ह्रींबीजाक्षरवासिनि शशिकले श्रीचक्र रूपेशिवे
मीनाक्षि मलयध्वजाधिपसुते श्रीसुन्दरेशप्रिये।
ह्रीं ह्रीं ह्रीमिति मन्त्रराजमनिशं जप्त्वाऽम्बिकां त्वामहम्
दृष्टुं देहि ममाद्य चक्षुरमलं त्वां पूजयाम्यन्वहम् ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीमीनाक्षी पञ्चदशी स्तोत्रं संपूर्णम्॥

॥ श्रीललिताम्बापरमेश्वरस्तवः ॥

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कलयतु कल्याणततिं कमलासखपद्मयोनिमुखवन्द्यः ।
करिमुखषण्मुखयुक्तः कामेशस्त्रिपुरसुन्दरीनाथः ॥ १ ॥

एकैवाहं जगतीत्यायोधनमध्य अब्रवीद्यादौ ।
शुम्भं प्रति सा पायादाद्या शक्तिः कृपापयोराशिः ॥ २ ॥

ईषदिति मन्यते यत्पदभक्तः शंभुविष्णुमुखपदवीः ।
सा मे निश्चलविरतिं दद्याद्विषयेषु विष इवात्यन्तम् ॥ ३ ॥

लभते परात्मविद्यां सुदृढामेवाशु यत्पदासक्तः ।
तां नौमि बोधरूपामाद्यां विद्यां शिवाजमुखसेव्याम् ॥ ४ ॥

ह्रीमान्भवेत्सुरेशस्तद्गुरुरपि यत्पदाब्जभक्तस्य ।
लक्ष्मीं गिरं च दृष्ट्वा सा मामव्यात्तयोः प्रदानेन ॥ ५ ॥

हसति विधुं हासेन प्रवालमपि पञ्चशाखमार्दवतः ।
अधरेण बिम्बमव्या त्सा मा सोमार्धमूर्धपुण्यततिः ॥ ६ ॥

सकलाम्नायशिरोभिस्तात्पर्येणैव गीयते रूपम् ।
यस्याः सावतु सततं गङ्गाधरपूर्वपुण्यपरिपाठी ॥ ७ ॥

कलिमलनिवारणव्रतकृतदीक्षः कालसर्वगर्वहरः ।
करणवशीकरणपटुप्राभवदः पातु पार्वतीनाथः ॥ ८ ॥

हरतु तमो हार्दं मे हालाहलराजमानगलदेशः।
हंसमनुप्रतिपाद्यः परहंसाराध्यपादपाथोजः ॥ ९॥

ललनाः सुरेश्वराणां यत्पदपाथोजमर्चयन्ति मुदा।
सा मे मनसि विहारं रचयतु राकेन्दुगर्वहरवदना ॥ १०॥

ह्रीमन्तः कलयति यो मूलं मूलं समस्तलक्ष्मीनाम्।
तं चक्रवर्तिनोऽपि प्रणमन्ति च यान्ति तस्य भृत्यत्वम् ॥ ११॥

सदनं प्रभवति वाचां यन्मूर्तिध्यानतो हि मूकोऽपि।
सरसां सालंकारां सा मे वाचं ददातु शिवमहिषी ॥ १२॥

करकलितपाशसृणिशरशरासनः कामधुक्प्रणम्राणाम्।
कामेश्वरीहृदम्बुजभानुः पायाद्युवा कोऽपि ॥ १३॥

लब्ध्वा स्वयं पुमर्थांश्चतुरः किंचात्मभक्तवर्येभ्यः।
दद्याद्यत्पदभक्तः सा मयि करुणां करोतु कामेशी ॥ १४॥

ह्रींकारजपपराणां जीवन्मुक्तिं च भुक्तिं च।
या प्रददात्यचिरात्तां नौमि श्रीचक्रराजकृतवसतिम् ॥ १५॥

श्रीमातृपदपयोजासक्तस्वान्तेन केनचिद्यतिना।
रचिता स्तुतिरियमवनौ पठतां भक्त्या ददाति शुभपङ्क्तिम् ॥ १६॥

इति श्रीललिताम्बापरमेश्वरस्तवः संपूर्णः ॥

श्रीललिताम्बापरमेश्वरस्तुतिः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणशैलधन्वा
करधृतकुम्भाक्षमालिकामुद्रः ।
कलयतु मम संतोषं
करिचर्मधरः कृपापयोराशिः ॥ १ ॥

एकात्मकत्वधिषणा-
मेधयतीमीशजीवयोर्नमताम् ।
एकान्तवासलभ्या-
मेकां पुण्यावलिं नुमः शंभोः ॥ २ ॥

ईशोऽर्धवपुर्यस्या
ईप्सितपङ्क्तिर्यदाङ्घ्रिनतसुलभा ।
ईकाररूपिणीं ता-
मीश्वरपत्नीं हृदा सदा कलये ॥ ३ ॥

लभ्यन्तेऽखिलविभवा
लब्धावसरैर्यदीयमन्त्रजपे ।
लक्ष्मीगीर्विनुता सा
लक्ष्या भूयान्मदीयचित्तस्य ॥ ४ ॥

ह्रींकारपद्मभृङ्गौ
ह्रींकारावृत्तिशीलनरसुलभौ ।
ह्रींकारगिरिमृगेन्द्रौ
ह्रींकारेणैव भावयामि शिवौ ॥ ५ ॥

हरतादाशु जडत्वं
हरिदधिपाराध्यपादपाथोजः ।
हरिणाङ्ककलितचूडो
हृतवर्ष्मार्धः कुलाद्रिकन्यकया ॥ ६ ॥

सत्यं ज्ञानमितीमे
सकलाम्नाया वदन्ति यद्रूपम् ।
सद्गुरुमुखैकवेद्यां
सन्मतिदां नौमि तां परामनिशम् ॥ ७ ॥

कर्मभिरात्मानुगणैः
कलितामलभावचित्तकञ्जातैः ।
कतिपयपुरुपवरेण्यैः
कथमपि बुद्धं नमामि शशिमौलिम् ॥ ८ ॥

हतरिपुवर्गैः शान्तै-
र्हरिहयपद्मोद्भवादिपदविमुखैः ।
हंसकरैः परमाद्यै-
र्हस्ताम्बुजपूजितं नमामि हरम् ॥ ९ ॥

ललितां कवित्वसरणिं
लभते मूकोऽपि यत्कृपालेशात् ।
लङ्केशाहितविनुतां
लम्बोदरमातरं नमस्यामि ॥ १० ॥

ह्रींकारगेहगृहिणौ
ह्रींकारपयःपयोधिकल्पतरू ।
ह्रींकारवनमयूरौ
ह्रींकारशरीरिणौ शिवौ वन्दे ॥ ११ ॥

सम्यङ् निरुध्य चेतः
सकलानि निगृह्य करणानि।
सततं यतिभिर्हृदये
समाधिभाव्यां नमामि ललिताम्बाम् ॥ १२॥

कणभुक्कपिलाराध्यः
कथिताधिकसौख्यदानकृतदीक्षः।
करविधृतहरिणबालः
कलाभिवृद्ध्यै ममास्तु परमेशः ॥ १३॥

ललनाभिस्त्रिदशानां
ललितैर्गीतैः स्तुतात्मचारित्राम्।
लसदलकफालदेशां
लभ्यां योगैर्नमामि जगदम्बाम् ॥ १४॥

ह्रींकारसौधराजौ
ह्रींकाराम्भोधिपूर्णसितकिरणौ।
ह्रींकारवाच्यरूपौ
ह्रींनिष्कुटकोकिलौ शिवौ कलये ॥ १५॥

आदौ यन्मनुवर्णै-
र्घटिता रचिता स्तुतिर्येयम्।
सा ललिता तामूरी-
कुर्यादव्याजकरुणाङ्गी ॥ १६॥

॥ इति श्रीललिताम्बापरमेश्वरस्तुतिः संपूर्णं॥

कल्पांदृष्टिपूजास्तुति स्तोत्रं

(श्रीषोडशोपचार मानसिकमन्त्रोक्तविधिना देवतास्तुतिः)

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कल्याणोज्वलकार्मुकानिक्तकलानन्देनमन्दस्मितां
कारुण्यांकुशपञ्चबाणकलितां कन्दर्पदर्पोज्वलां।
काम्याकर्षण दिव्यपाशाभरितां बालार्ककोटिप्रभां
आदिक्षांततनुत्रयां त्रिनयनांऽप्रायेच्छिवां शाम्भवीम् ॥ १॥

एकाकारतया प्रपञ्चभरितामेकान्तसञ्चारिणीं
एणीकाज्वलसंविदांपरकलामेणामबिंबां परां।
एकोदेव इति प्रसिद्धमनुभिः प्राख्यात चिन्मातृकाम्
एकारांकित बैंदवी परशिवामेकाक्षरीमाहुवे ॥ २॥

ईशानादि महेन्द्ररुद्रपरिषद् ब्रह्मादिपादोन्नता
लंकारांकितदिव्यरत्नविलसत् सिंहासनेसुस्थिराम्।
ईषद्भक्तितया त्वदीय चरणांभोजार्चनोदीप्तवान्
इच्छाज्ञानक्रियात्मकासनमिदं गृह्णातुते शाम्भवम् ॥ ३॥

लक्षाज्ञानमयं सुधार्णवजलेनापूर्यपात्रार्पितं
लाक्षालंकृतपादपङ्कजयुगेसंक्षोभ्यभक्त्यापुनः।
लक्ष्मीरञ्जितहेमधामकलशेनापूर्यशीतांबुना-
स्वा चामार्थमिदं प्रकल्पितमदे गृह्णत्वं हे शाम्भवि ॥ ४॥

ह्रींकारोज्वलवर्णकल्पितकलालंकारसिंहासने
ह्रींकारादिसमस्तसिद्धकलनैः संस्तूयमाने मुदा।
गांगं चंद्रसचंदनं हिमजले सस्यानिजानेक्षती
मातर्देवि कृपां कुरुत्वमधुना स्नानेत्वमङ्गीकुरु ॥ ५॥

हव्यागूढतनुप्रकाशसुभगे क्षौमांबरो भक्तिते
हंसस्फाटिकचन्द्रिकाभिरमलं तन्वोत्तुरीमांसिसं

हारालंकृतपीवरस्तनभरामानंदमंदस्मिता
हव्यातीतमथामनंग विभवामाराधयामांबिकां ॥ ६ ॥

सौवर्णोज्वलरत्नकुण्डलधरां सौभाग्यनासामणि
सांद्रानंदकरीप्रसिद्धमणिभिः सोहंकिरीटंशुभम्
सर्वालंकृतबाहुदंडयुगल ग्रैवेयहारान् बहून्
सल्लोपाचित् हारनूपुरयुगं गृह्णातुते शाम्भवी ॥ ७ ॥

कस्तूरिघनसारकुंकुमरजोगंधोत्कटंचंदनं
कर्पूरच्छवि हारकाभिरमलं भक्त्यासमर्प्याक्षतैः
कल्हारोज्वलजातिपंकजरजः पद्मैश्चसौकेतकी
वनमल्लिका कल्पवृक्षकुसुमैरभ्यर्चयामीश्वरीम् ॥ ८ ॥

हाहाकाररवप्रसिद्धकलता हाकारहंतात्मकं
भूयोदेवि हि कल्पयामि सततं ब्रह्मेन्द्रवन्द्येशिवे
हंबीजार्ध कलात्मिकां तविभवेमल्यादिचक्रांकिते
हारिद्रांकितहेमधामकलशे गृह्णीष्वदीयंमहत् ॥ ९ ॥

लंबीजांकितसिद्धमार्गसहजैर्द्रव्यैरनंतैर्मुदा-
लंकारांकितवह्निभानुशशिभिःपात्रसुधापूरितैः
लिप्तामोद मारीचिर्हिंगुसुरभिः युक्तैस्तुभक्तैःसदा
लक्ष्मींचक्रनिवासिनीं कमलनीं संतर्पयामीश्वरीम् ॥ १० ॥

ह्रींकारत्रयवर्णपीठनिलये ह्रींकारमंत्रात्मिके
ह्रींकारोज्वल हेमधामचषकेसिद्यन्नभक्षान् वहन्
ह्रींश्रींकल्पितकामधेनुनियतः क्षीराज्यमध्वास्यत
ह्रींकारेण निवेदयामि सततं ह्रींकारनादप्रिये ॥ ११ ॥

सर्वाम्नायपरापरांतसलिलं सौगंधगन्धैर्युतं
सौन्दर्येश्वरवल्लभे परेशिवे गृह्णीयहस्तोदकं
सल्लायाणीवकौतुकामृतरसं संपूर्णचंद्रप्रभं
सत्करहारयुतं गृहाण वरदे तांबूलमव्यास्यतम् ॥ १२ ॥

कादिक्षांतस्वरादिवर्णमणिभिः संकीर्णदीपांकुराम्
कालैकत्रयपंचसप्तरवकनैवर्णपात्रैमुदा
काव्यालंकृत नाटकाविश्रुतिभिः संगीतनृत्यैमुहुः
कल्लोलांतमिदंगृहाणवरदे नीराजनंनिर्मलम् ॥ १३ ॥

लावण्यांगदैमदीयपंचकमिदं सन्मार्गमार्गोदयं
छत्रंचामरदर्पणं चमजनं दत्वाशिवेश्रादरात्
लीलापूजितपादपंकजयुगे संपूज्यगंधाक्षतैः
लक्ष्मीरंजितपादुका तु विभवां संतर्पयामीश्वरीम् ॥ १४ ॥

ह्रींकारीशिवतत्वमय्यनिलयां ह्रींकारमन्त्रात्मिकां
ह्रींकारत्रयवाग्भवादिमनुभिः संशोध्यतत्वंचयः
त्रकादिसहादिकादिमनुभिर्मत्वापुनःशांभवीं
स्तुत्वा शंकरवल्लभां त्रिनयनामुद्धासयामीकरीम् ॥ १५ ॥

वंदेशपादार्वितदृष्टिमुमयानिमाल्यविजार्चिविधासमर्थः
दुःखावलीक्षेत्रपतेप्रवक्ष्य विश्रामये भक्तिजनैर्मुहूर्मुदा ॥ १६ ॥

ध्यानावाहनमासनार्च्यकमिदं स्नानांबुकं भूषणं
गंधंचाक्षतपुष्पधूपममलं ज्योतिं च नैवेद्यकम्
तांबूलार्घ्यकच्छत्रचामरयुगं रत्नोज्वलंदर्पणं
मापूरव्यजनंप्रदक्षिणशतं नमस्कारान् गृहाणांबिके ॥ १७ ॥

कल्याणस्तुतिमेतदीयममलं ह्रींकारमंत्रात्मकं
सर्वाम्नायकरं महत्कविजनोलंकारह्रींकारदं
सर्वज्ञादिसमस्तसिद्धकमलै संस्तूयमानैर्मुदा
भक्त्यास्तोत्रमिदं पठेत् प्रतिदिनं ह्रींकारमेतिक्षणत् ॥ १८ ॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे कल्पांदृष्टिपूजास्तुतिस्तोत्रं समाप्तम् ॥

Humble request w.r.t Stotra #19 कल्पांद्दष्टिपूजास्तुति स्तोत्रं

This stotra 'Kalpaam Drishti Puja Stuthi' was originally a palm leaf manuscript and was digitised by eGangotri of Dharmartha Trust. The sanskrit lipi used in this old manuscript is ancient in nature. An attempt was made to convert to existing prevalent version of devanagari lipi.

I am presenting below the actual manuscript pages so that the sadhaka may make relevant changes/corrections. I humbly request you to send the changes or corrections made to my email id varamala@gmail.com, so that I can accommodate them in the stotra for the benefit of all.

ॐ अथषोडशोपचारमानसिकमंत्रोक्तविधिनादेवतास्तु
तिंपठेत् कल्याणोज्ज्वलकार्मुकांतिनकलानंदेनमंद।
स्मितां कारुण्यांकुशपंचबाणकलितांकंदर्पदर्पोज्ज्वलां
कामाकर्षणादिव्यपाशभरितांबालार्ककोटिप्रभा मादि
त्यांतनतुत्रयांत्रिनयनांध्यायेच्छिवांशांभवीम् १ प्रकाका
रतयाप्रपंचभरितामेकांतसंचारिणी मेणीकाज्वलसं
न्विदांपरकलामेणांकबिंबांपरां प्रकोदेवश्रुतिप्रसिद्धम

उभिः प्रख्यातचिन्मात्रकामैकाराङ्कितबैंदवीपरशिवामेका

त्तरीमाहुर्वै ईशानादिग महेंद्ररुद्रपरिषद्ब्रह्मादिपादो

न्नता लंकाराङ्कितदिव्यरत्नविलसत्सिंहासने सुस्थि

रे ईमझ्क्तित्याखदीय चरणाम्भोजार्चनोदीतवान्

इच्छाज्ञानक्रियात्मकासनमिदं गर्भस्तने शांभवे । ३ ल

नवं
ज्ञात्ता नसुधार्णवजलेनापूर्यपात्रार्पितं लाक्षालंकृत

पादपंकजयुगे संतोषभक्त्यापुनः लक्ष्मीरंजितहेम

थामकलशेनापूर्यपीतांबुना ख्याचामार्थमिदंप्रक।

ल्पितमजे रदेहूत्तंहे शांभवी । ४ ह्रींकारोज्वलवर्णक।

ल्पितकलालंकारसिंहासने ह्रींकारादिसमस्तसिद्धकलनैः

संस्तूयमाने सुदा ^ मातर्देविकृपांकुरुत्वमधुनास्नानेत्वमं।

गीकुरु ५ हव्यागरुघनत्वप्रकाशासभगेतोमांवरोभक्तिजे

हंसस्फाटिकचंद्रिकाभिरमलं तन्वोत्तरीमांसिसं हाराले

कृतपीवरस्तनभरामानंदमंदस्मिता हव्यातीनमथामनं

★ गांगंचंद्रसचंदनंहिमजले
सुस्यानिज्ञानेदानी ^ ४

गविभवामाराधयामांविकां ५ सौवर्णोज्वलरत्नकुंडलयशंसो

भाग्यनासामणी सांद्रानंदकरीप्रसिद्धमणिभिः सोहंकिरीटं

शुभं सर्वालंकृतबाहुदंडयुगलग्रैवेयहारान्वहन् सञ्जो

पाविन्हारनूपुरयुगेगरत्नांचितेशांभवी ७ कस्तूरीघनसा

रकुंकुमरजोगंधोत्कटंचंदनं कर्पूरच्छविहारकाभिरमलं

भक्त्यासमर्पीकृतैः कल्हारोज्वलजातिपंकजरजः पद्मश्च

सौकेतकी कांचनमल्लिककल्पवृक्षकुसुमैरभ्यर्चयामी

स्वरीम् ८ हाहाकाररवप्रसिद्धकलनाहाकारहंनात्म

कं धूपंदेविहिकल्पयामिसततं ब्रह्मेंद्रवंद्येशिवे ह्वंदी

जाद्यंकलान्विकांतविभवेमल्यादिचक्रांकिते हारिद्रां

कितहेमधामकलशेरत्नांस्वदीपंमहत् ९ लंबिजां

कितसिद्धमार्गसहजेदैवैरनंतैर्मुदा लंकारांकितनव

ञ्जिभानुप्राणिभिःपात्रसुधापूरितैः लिप्तामोदमरीचि

हिंगुसुरभिःयुक्तैसुभक्तैःसदा लक्ष्मीचक्रनिवासिनीक

मलनीसंतर्पयामीश्वरीम् ९ ह्रींकारत्रयवर्णपीठनिलयेह्रीं

कारमंत्रात्मिके ह्रींकारोज्वलहेमधामचषके सिद्धान्नभ

क्तान्वहन् ह्रींश्रीकल्पितकामधेनुनियतः दीराज्यम

धारुयत ह्रौंकारेणनिवेदयामिसततं ह्रींकारनादप्रिये ॥

सर्वाम्नायपरापरांतसलिलं सौगंधगंधेर्युतं सौंदर्यैश्वर

वल्लभेपरेशिवे स्वल्पीयहस्तोदकं सल्लायाणीवकोतवका

स्ततरसं संपूर्णचंद्रप्रभंसत्करसरयुतंगृहाणवरदे तांबू

लमवाप्यतं १२ कादिक्षांतस्वरादिवर्णमणिभिः संकीर्ण

दीपांकुराम् कालेकत्रयपंचसप्तरवकनेवर्णपात्रैमुदा

काव्यालंकृतनाटकाविष्कृतिभिःसंगीतनृत्यैर्मुहुः कल्लो

लांतमिदंगृहाणवरदेनीराजनंनिर्मलं १३ लावण्यांगदे

मदीयपंचकमिदंसन्मार्गमार्गोदयं छत्रं चामरदर्पणं च

मजनंदत्वाशिवेश्वादरात् लीलापूजितपादपंकजयुगे

संपूज्य गंधाद्यतैः लक्ष्मीरंजितपादुकात्रविभवांसंतर्पया

मीश्वरीम् १४ ह्रींकारीशिवतत्त्वमध्यनिलयां ह्रींकारमंत्रा
कां ह्रींकारत्रयवाग्भवादिमनुभिः संशोध्यतत्त्वस्य यःत्राको
दिसहादिकादिममुभिर्मत्वापुनःशांभवी मत्वाशंकरव
लभांत्रिनयनामुद्भासयामीकारीम् १५ चंदेशापादार्विनष्ट
ष्टिमुध्यातिर्मात्पविजार्चिविधासमर्पैः दुःखावलीद्योत्रपत्ते
प्रवस्यविश्वामयेभक्तिजनैर्मुहुर्मुदा १८ ध्यानावाहनमासना
र्घ्यकमिदंस्नानोक्ष्यकंभूषणं गंधंवाक्षतपुष्पधूपममलंज्यो

तिश्चनैवेद्यकं तांबूलार्घ्यकछत्रचामरयुगं रत्नोज्वलंद
र्पणं माप्यूरव्यजनं प्रदक्षिणशतं नमस्कारान्गृहाणांबि
के १७ कल्याणस्तुतिमेतदेयममलं ह्रींकारमंत्रात्मिकं
सर्वाम्नायकरंमहत्कविजनोलंकारह्रींकारदं सर्वज्ञादि
समस्तसिद्धकमलैः संस्तूयमानैर्मुदा भक्त्यास्तोत्रमिदंप
ठत्यतिजनो लंकारह्रींकारमेतत्क्षणात् १५ इतिश्रीरु
द्रयामलेउमामहेश्वरसंवादेकल्पाष्टष्टिपूजास्तुतिस्तोत्रं समा·

श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यपराधक्षमापणस्तवः

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

कञ्जमनोहरपादचलन्मणिनूपुरहंसविराजिते
कञ्जभवादिसुरौघपरिष्टुतलोकविसृत्वरवैभवे।
मञ्जुलवाङ्मयनिर्जितकीरकुलेऽचलराजसुकन्यके
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ १ ॥

एणधरोज्ज्वलफालतलोल्लसदैणमदाङ्कसमन्विते
शोणपरागविचित्रितकन्दुकसुन्दरसुस्तनशोभिते।
नीलपयोधरकालसुकुन्तलनिर्जितभृङ्गकदम्बके
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ २ ॥

ईतिविनाशनि भीतिनिवारणि दानवहन्त्रि दयापरे
शीतकराङ्कितरत्नविभूषितहेमकिरीटसमन्विते।
दीप्ततरायुधभण्डमहासुरगर्वनिहन्त्रि पुराम्बिके
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ३ ॥

लब्धवरेण जगत्रयमोहनदक्षलतान्तमहेषुणा
लब्धमनोहरसालनिषण्णसुदेहभुवा परिपूजिते।
लङ्घितशासनदानवनाशनदक्षमहायुधराजिते
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ४ ॥

ह्रींपदभूषितपञ्चदशाक्षरषोडशवर्णसुदेवते
ह्रीमतिहादिमहामनुमन्दिररत्नविनिर्मितदीपिके।
हस्तिवराननदर्शितयुद्धसमादरसाहसतोषिते
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ५ ॥

हस्तलसन्नवपुष्पशरेक्षुशरासनपाशमहाङ्कुशे
हर्यजशंभुमहेश्वरपादचतुष्टयमञ्चनिवासिनि।
हंसपदार्थमहेश्वरियोगिसमूहसमादृतवैभवे
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ६॥

सर्वजगत्करणावननाशनकर्त्रि कपालिमनोहरे
स्वच्छमृणालमरालतुषारसमानसुहारविभूषिते।
सज्जनचित्तविहारिणि शङ्करि दुर्जननाशनतत्परे
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ७॥

कञ्जदलाक्षि निरञ्जनि कुञ्जरगामिनि मञ्जुलभाषिते
कुङ्कुमपङ्कविलेपनशोभितदेहलते त्रिपुरेश्वरि।
दिव्यमतङ्गसुताधृतराज्यभरे करुणारसवारिधे
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ८॥

हल्लकचम्पकपङ्कजकेतकपुष्पसुगन्धितकुन्तले
हाटकभूधरशृङ्गविनिर्मितसुन्दरमन्दिरवासिनि।
हस्तिमुखाम्ब वराहमुखीधृतसैन्यवरे गिरिकन्यके
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ९॥

लक्ष्मणसोदरसादरपूजितपादयुगे वरदे शिवे
लोहमयादिबहून्नतसालनिषण्णबुधेश्वरसंवृते।
लोलमदालसलोचननिर्जितनीलसरोजसुमालिके
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ १०॥

ह्रीमति मन्त्रमहाजपसुस्थिरसाधकमानसहंसिके
हेपितशीतकराननशोभिनि हेमलतेव सुभास्वरे।
हार्दतमोगुणनाशनि पाशविमोचनि मोक्षसुखप्रदे
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ ११॥

सच्चिदभेदसुखामृतवर्षिणि तत्वमसीति सदादृते
सद्गुणशालिनि साधुसमर्चितपादयुगे परशाम्भवि।
सर्वजगत्परिपालनदीक्षितबाहुलतायुगशोभिते
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ १२॥

कम्बुगले वरकुन्दरदे रसरञ्जितपादसरोरुहे
काममहेश्वरकामिनि कोकिलकोमलभाषिणि भैरवि।
चिन्तितसर्वमनोरथपूरणकल्पलते करुणार्णवे
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ १३॥

हस्तकशोभिकरोज्ज्वलकङ्कणकान्तिसुदीपितदिङ्मुखे
शस्ततरत्रिदशालयकार्यसमादृतदिव्यतनूज्ज्वले।
कश्चतुरो भुवि देवि पुरेशि भवानि तव स्तवने भवेत्
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ १४॥

ह्रींपदलाञ्छितमन्त्रपयोनिधिमन्थनजातपरामृते
हव्यवहानिलभूयजमानकखेन्दुदिवाकररूपिणि।
हर्यजरुद्रमहेश्वरसंस्तुतवैभवशालिनि सिद्धिदे
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ १५॥

श्रीपुरवासिनि हस्तलसद्वरचामरवाक्कमलानुते
श्रीगुहपूर्वभवार्जितपुण्यफले भवमत्तविलासिनि।
श्रीवशिनीविमलादिसदानतपादचलन्मणिनूपुरे
पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥ १६॥

॥ इति श्रीमत्रिपुरसुन्दर्यपराधक्षमापणस्तवः संपूर्णः ॥

नवावरणस्थ देवी गायत्री मन्त्राः

गायत्रीं तु समुच्चार्य तत्तदावृतिदेवताः।
पूजनीयाः प्रयत्नेन सर्वकामार्थसिद्धये॥ १॥
इति वचनाच्छ्रीचक्रावरणदेवीनां गायत्र्यः प्रोच्यन्ते -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्
- इति गणपति गायत्री॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-आपदुद्धरणाय विद्महे वटुकेश्वराय धीमहि तन्नो वीरः प्रचोदयात्
- इति वटुक गायत्री॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-दिगम्बराय विद्महे कपालहस्ताय धीमहि तन्नः क्षेत्रपालः प्रचोदयात्
- इति क्षेत्रपाल गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-व्यापिकायै विद्महे नानारूपायै धीमहि तन्नो योगिनी प्रचोदयात्
- इति योगिनी गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-देवराजाय विद्महे वज्रहस्ताय धीमहि तन्नः शक्रः प्रचोदयात्
– इतीन्द्र गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-रुद्रनेत्राय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो वह्निः प्रचोदयात्
- इति वह्नि गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-वैवस्वताय विद्महे दण्डहस्ताय धीमहि तन्नो यमः प्रचोदयात्
- इति यम गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-निशाचराय विद्महे खड्गहस्ताय धीमहि तन्नो निर्ऋतिः प्रचोदयात्
- इति निर्ऋति गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-शुद्धहस्ताय विद्महे पाशहस्ताय धीमहि तन्नो वरुणः प्रचोदयात्
- इति वरुण गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-सर्वप्राणाय विद्महे यष्टिहस्ताय धीमहि तन्नो वायुः प्रचोदयात्
- इति वायु गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-यक्षेश्वराय विद्महे गदाहस्ताय धीमहि तन्नो यक्षः प्रचोदयात्

- इति कुबेर गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-सर्वेश्वराय विद्महे शूलहस्ताय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्

- इति शिव गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-चतुराननाय विद्महे वेदवक्त्राय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्

- इति ब्रह्म गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-पातालवासिने विद्महे सहस्रवदनाय धीमहि तन्नोऽनन्तः प्रचोदयात्

– इत्यनन्त गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-शतकोटिने विद्महे महावज्राय धीमहि तन्नो वज्रं प्रचोदयात्

- इति वज्र गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-तीक्ष्णभल्लाय विद्महे दीर्घदण्डाय धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्

- इति शक्ति गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-शत्रुघ्नाय विद्महे दीर्घकायाय धीमहि तन्नो दण्डः प्रचोदयात्

- इति दण्ड गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-तीक्ष्णधाराय विद्महे त्रिमूर्त्यात्मकाय धीमहि तन्नः खड्गः प्रचोदयात्

- इति खड्ग गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-जगदाकर्षणाय विद्महे महापाशाय धीमहि तन्नः पाशः प्रचोदयात्

- इति पाश गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-वशीकरणाय विद्महे महाङ्कुशाय धीमहि तन्नोऽङ्कुशः प्रचोदयात्

– इत्यङ्कुश गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-अयःसारायै विद्महे दीर्घगात्र्यै धीमहि तन्नो गदा प्रचोदयात्

- इति गदा गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-तीक्ष्णशिखाय विद्महे महाकायाय धीमहि तन्नः शूलं प्रचोदयात्

- इति शूल गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-रमावासाय विद्महे सहस्रपत्राय धीमहि तन्नः पद्मं प्रचोदयात्

- इति पद्म गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्नश्चक्रं प्रचोदयात्

- इति सुदर्शन गायत्री।

अथ षडङ्गदेवतानां गायत्र्यः -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-हृदयदेव्यै विद्महे नमः पदस्थायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

- इति हृदयदेवी गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-शिरोदेव्यै च विद्महे स्वाहाकारायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

- इति शिरोदेवी गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-शिखादेव्यै च विद्महे वषट्कारायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

- इति शिखादेवी गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-कवचदेव्यै च विद्महे हुँकारायै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

- इति कवचदेवी गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-नेत्रदेव्यै च विद्महे वौषट्कारायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

- इति नेत्रदेवी गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-अस्त्रदेव्यै च विद्महे फट्कारायै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

- इति अस्त्रदेवी गायत्री।

- इति षडङ्गदेवतानां गायत्र्यः॥

अथ षोडशनित्यानां गायत्र्यः -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-कामेश्वर्यै विद्महे नित्यक्लिन्नायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्

- इति कामेश्वरी गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-भगमालिन्यै विद्महे सर्ववशङ्कर्यै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्

- इति भगमालिनी गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-नित्यक्लिन्नायै विद्महे नित्यमदद्रवायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्

- इति नित्यक्लिन्ना गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-भेरुण्डायै विद्महे विषहरायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्

- इति भेरुण्डा गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-वह्निवासिन्यै विद्महे सिद्धिप्रदायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्

- इति वह्निवासिनी गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-महावज्रेश्वर्यै विद्महे वज्रनित्यायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्

- इति महावज्रेश्वरी गायत्री।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-शिवदूत्यै विद्महे शिवंकर्यै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्
- इति शिवदूती गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-त्वरितायै विद्महे महानित्यायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति त्वरिता गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-कुलसुन्दर्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्
- इति कुलसुन्दरी गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-नित्याभैरव्यै विद्महे नित्यानित्यायै धीमहि तन्नो योगिनी प्रचोदयात्
- इति नित्याभैरवी गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-विजयादेव्यै विद्महे महानित्यायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति विजयादेवी गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-सर्वमङ्गलायै विद्महे सर्वात्मिकायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्
- इति सर्वमङ्गला गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-ज्वालामालिन्यै विद्महे महाज्वालायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति ज्वालामालिनी गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-विचित्रायै विद्महे महानित्यायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति चित्रा गायत्री।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-क ए ई ल ह्रीं त्रिपुरसुन्दरी विद्महे ह स क ह ल ह्रीं पीठकामिनी धीमहि स क ल ह्रीं तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात् - इति श्री ललितामहानित्या गायत्री।
- इति षोडशनित्यानां गायत्र्यः॥

अथ गुरुमण्डलदेवतानां गायत्र्यः -
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-उड्डीशनाथाय विद्महे श्रीदुर्वाससे धीमहि तन्नः कौलिः प्रचोदयात्।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-षष्ठनाथाय विद्महे श्रीकुमाराय धीमहि तन्नः लक्ष्मीः प्रचोदयात्।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-मित्रनाथाय विद्महे श्रीकण्ठाय धीमहि तन्नः कुब्जिः प्रचोदयात्।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं-हंसहंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि तन्न हंसः प्रचोदयात्।
- इति गुरुमण्डलदेवतानां गायत्र्यः॥

प्रथमावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ सिद्धीनां गायत्र्यः-

४-अणिमासिद्ध्यै विद्महे वराभयहस्तायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इत्यणिमासिद्धी गायत्री। ४-लघिमासिद्ध्यै विद्महे निधिवाहनायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति लघिमासिद्धी गायत्री। ४-महिमासिद्ध्यै विद्महे महासिद्ध्यै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति महिमासिद्धी गायत्री। ४-ईशित्वसिद्ध्यै विद्महे जगद्व्यापिकायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इतीशित्वसिद्धी गायत्री। ४-वशित्वसिद्ध्यै विद्महे शोणवर्णायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति वशित्वसिद्धी गायत्री। ४-प्राकाम्यसिद्ध्यै विद्महे निधिवाहनायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति प्राकाम्यसिद्धी गायत्री। ४-इच्छासिद्ध्यै विद्महे पद्महस्तायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इतीच्छासिद्धी गायत्री। ४-भुक्तिसिद्ध्यै विद्महे महासिद्ध्यै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति भुक्तिसिद्धी गायत्री। ४-रससिद्ध्यै विद्महे भक्तवत्सलायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति रससिद्धी* गायत्री। ४-मोक्षसिद्ध्यै विद्महे महानिर्मलायै धीमहि तन्नः सिद्धिः प्रचोदयात् - इति मोक्षसिद्धी** गायत्री।

(संप्रदायभेदानुसारे प्राप्तिसिद्धी* सर्वकामसिद्धी** इत्यपि वर्तते।)

- इति सिद्धीनां गायत्र्यः।

अथ मातृगायत्र्यः -

४-ब्राह्मशक्त्यै विद्महे पीतवर्णायै धीमहि तन्नो ब्राह्मी प्रचोदयात् - इति ब्राह्मी गायत्री। ४-श्वेतवर्णायै विद्महे शूलहस्तायै धीमहि तन्नो माहेश्वरी प्रचोदयात् - इति माहेश्वरी गायत्री। ४-शिखिवाहनायै विद्महे शक्तिहस्तायै धीमहि तन्नः कौमारी प्रचोदयात् - इति कौमारी गायत्री। ४-श्यामवर्णायै विद्महे चक्रहस्तायै धीमहि तन्नो वैष्णवी प्रचोदयात् - इति वैष्णवी गायत्री। ४-श्यामलायै विद्महे हलहस्तायै धीमहि तन्नो वाराही प्रचोदयात् - इति वाराही गायत्री। ४-श्यामवर्णायै विद्महे वज्रहस्तायै धीमहि तन्न ऐन्द्री प्रचोदयात् -इति माहेन्द्री गायत्री। ४-कृष्णवर्णायै विद्महे शूलहस्तायै धीमहि तन्नश्चामुण्डा प्रचोदयात् - इति चामुण्डादेवी गायत्री। ४-पीतवर्णायै विद्महे पद्महस्तायै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् - इति महालक्ष्मी गायत्री।

- इति मातृगायत्र्यः॥

अथ मुद्रागायत्र्यः -

४-सर्वसंक्षोभिण्यै विद्महे वरहस्तायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वसंक्षोभिणी गायत्री। ४-सर्वविद्राविण्यै विद्महे महाद्राविण्यै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वविद्राविणी गायत्री। ४-सर्वाकर्षिण्यै विद्महे महामुद्रायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वाकर्षिणी गायत्री। ४-सर्ववशङ्कर्यै विद्महे महावश्यायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्ववशङ्करी गायत्री। ४-सर्वोन्मादिन्यै विद्महे महामायायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वोन्मादिनी गायत्री। ४-महाङ्कुशायै विद्महे शोणवर्णायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वमहाङ्कुशादेवी गायत्री। ४-सर्वखेचर्यै विद्महे गगनवर्णायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वखेचरि गायत्री। ४-बीजरूपायै विद्महे महाबीजायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वबीजादेवी गायत्री। ४-महायोन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वयोनी गायत्री। ४-त्रिखण्डायै विद्महे त्रिकात्मिकायै धीमहि तन्नो मुद्रा प्रचोदयात् - इति सर्वत्रिखण्डादेवी गायत्री।

- इति मुद्रागायत्र्यः ॥

द्वितीयावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ षोडशदलदेवतानां गायत्र्यः -

४-कामाकर्षिण्यै विद्महे रक्तवस्त्रायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति कामाकर्षणी गायत्री। ४-बुद्ध्याकर्षिण्यै विद्महे बुद्ध्यात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति बुद्ध्याकर्षणी गायत्री। ४-अहङ्काराकर्षिण्यै विद्महे तत्त्वात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति अहङ्काराकर्षणी गायत्री। ४-शब्दाकर्षिण्यै विद्महे सर्वशब्दात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति शब्दाकर्षणी गायत्री। ४-स्पर्शाकर्षिण्यै विद्महे स्पर्शात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति स्पर्शाकर्षणी गायत्री। ४-रूपाकर्षिण्यै विद्महे रूपात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति रूपाकर्षणी गायत्री। ४-रसाकर्षिण्यै विद्महे रसात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति रसाकर्षणी गायत्री। ४-गन्धाकर्षिण्यै विद्महे गन्धात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयाय् - इति गन्धाकर्षणी गायत्री। ४-चित्ताकर्षिण्यै विद्महे चित्तात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति चित्ताकर्षणी गायत्री। ४-धैर्याकर्षिण्यै विद्महे धैर्यात्मिकायै धीमहि तन्नः कला

प्रचोदयात् - इति धैर्याकर्षणी गायत्री। ४-स्मृत्याकर्षिण्यै विद्महे स्मृतिस्वरूपिण्यै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति स्मृत्याकर्षणी गायत्री। ४-नामाकर्षिण्यै विद्महे नामात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति नामाकर्षणी गायत्री। ४-बीजाकर्षिण्यै विद्महे बीजात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति बीजाकर्षणी गायत्री। ४-आत्माकर्षिण्यै विद्महे आत्मस्वरूपिण्यै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति आत्माकर्षणी गायत्री। ४-अमृताकर्षिण्यै विद्महे अमृतस्वरूपिण्यै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति अमृताकर्षणी गायत्री। ४-शरीराकर्षिण्यै विद्महे शरीरात्मिकायै धीमहि तन्नः कला प्रचोदयात् - इति शरीराकर्षणी गायत्री।

- इति कामाकर्षिण्यादीनां षोडशदलदेवतानां गायत्र्यः॥

तृतीयावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ अष्टदलदेवतानां गायत्र्यः -

४-अनङ्गकुसुमायै विद्महे रक्तकञ्चुकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गकुसुमा गायत्री। ४-अनङ्गमेखलायै विद्महे पाशहस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गमेखला गायत्री। ४-अनङ्गमदनायै विद्महे शरहस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गमदना गायत्री। ४-अनङ्गमदनातुरायै विद्महे धनुर्हस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गमदनातुरा गायत्री। ४-अनङ्गरेखायै विद्महे दीर्घकेशिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गरेखा गायत्री। ४-अनङ्गवेगिन्यै विद्महे सृणिहस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गवेगिनी गायत्री। ४-अनङ्गाङ्कुशायै विद्महे नित्यक्लेदिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति अनङ्गाकुशा गायत्री। ४-अनङ्गमालिन्यै विद्महे सुप्रसन्नायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् इति अनङ्गमालिनी गायत्री।

- इत्यष्टदलदेवतानां गायत्र्यः॥

तुरीयावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ चतुर्दशारदेवतागायत्र्यः -

४-सर्वसंक्षोभिण्यै विद्महे बाणहस्तायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वसंक्षोभिणी गायत्री। ४-सर्वविद्राविण्यै विद्महे कार्मुकहस्तायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वविद्राविणी गायत्री। ४-सर्वाकर्षिण्यै विद्महे शोणवर्णायै

धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वाकर्षिणी गायत्री। ४-सर्वाह्लादिन्यै विद्महे जगद्व्यापिन्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वाह्लादिनी गायत्री। ४-सर्वसंमोहिन्यै विद्महे जगन्मोहिन्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वसंमोहिनी गायत्री। ४-सर्वस्तम्भिन्यै विद्महे जगत्स्तम्भिन्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वस्तम्भिनी गायत्री। ४-सर्वजृम्भिण्यै विद्महे जगद्रञ्जिन्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वजृम्भिणी गायत्री। ४-सर्ववशंकर्यै विद्महे महावशङ्कर्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्ववशङ्करि गायत्री। ४-सर्वरञ्जिन्यै विद्महे वैडूर्यवर्णायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वरञ्जिनी गायत्री। ४-सर्वोन्मादिन्यै विद्महे जगन्मायायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वोन्मादिनी गायत्री । ४-सर्वार्थसाधिन्यै विद्महे पुरुषार्थदायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वार्थसाधिनी गायत्री। ४-सर्वसंपत्प्रपूरिण्यै विद्महे संपदात्मिकायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वसंपत्तिपूरणी गायत्री। ४-सर्वमन्त्रमय्यै विद्महे मन्त्रमात्रे धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वमन्त्रमयि गायत्री। ४-सर्वद्वन्द्वक्षयंकर्यै विद्महे कालात्मिकायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् - इति सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि गायत्री।

- इति चतुर्दशारदेवतागायत्र्यः॥

पञ्चमावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ बहिर्दशारदेवता गायत्र्यः -

४-सर्वसिद्धिप्रदायै विद्महे श्वेतवर्णायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वसिद्धिप्रदा गायत्री। ४-सर्वसंपत्प्रदायै विद्महे महालक्ष्म्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वसंपत्प्रदा गायत्री। ४-सर्वप्रियंकर्य्यै विद्महे कुन्दवर्णायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वप्रियङ्करि गायत्री। ४-सर्वमङ्गलकारिण्यै विद्महे मङ्गलात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वमङ्गलकारिणी गायत्री। ४-सर्वकामप्रदायै विद्महे कल्पलतात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वकामप्रदा गायत्री। ४-सर्वदुःखविमोचिन्यै विद्महे हर्षप्रदायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वदुःखविमोचिनी गायत्री। ४-सर्वमृत्युप्रशमन्यै विद्महे सर्वसञ्जीविन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वमृत्युप्रशमनी गायत्री। ४-सर्वविघ्ननिवारिण्यै विद्महे सर्वकामायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वविघ्ननिवारिणी गायत्री। ४-सर्वाङ्गसुन्दर्यै विद्महे जगद्योन्यै धीमहि तन्नो

देवी प्रचोदयात् - इति सर्वाङ्गसुन्दरि गायत्री। ४-सर्वसौभाग्यदायिन्यै विद्महे जगज्जनन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वसौभाग्यदायिनी गायत्री।
- इति बहिर्दशारदेवतागायत्र्यः ॥

षठ्यावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ अन्तर्दशारदेवतागायत्र्यः –

४-सर्वज्ञायै विद्महे महामायायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वज्ञा गायत्री। ४-सर्वशक्त्यै विद्महे महाशक्त्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वशक्ति गायत्री। ४-सर्वैश्वर्यप्रदायै विद्महे ऐश्वर्यात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वैश्वर्यप्रदा गायत्री। ४-सर्वज्ञानमय्यै विद्महे ज्ञानात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वज्ञानमयि गायत्री। ४-सर्वव्याधिविनाशिन्यै विद्महे औषधात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वव्याधिविनाशिनी गायत्री। ४-सर्वाधारस्वरूपिण्यै विद्महे आधारात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वाधारस्वरूपा गायत्री। ४-सर्वपापहरायै विद्महे सर्वतीर्थस्वरूपिण्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वपापहरा गायत्री। ४-सर्वानन्दमय्यै विद्महे महानन्दायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वानन्दमयि गायत्री। ४-सर्वरक्षास्वरूपिण्यै विद्महे सर्वरक्षणायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वरक्षास्वरूपिणी गायत्री। ४-सर्वेप्सितफलप्रदायै विद्महे फलात्मिकायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् - इति सर्वेप्सितप्रदा गायत्री।
- इति अन्तर्दशारदेवतागायत्र्यः ॥

सप्तमावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ अष्टारदेवता गायत्र्यः -

४-वशिनीदेव्यै विद्महे पुस्तकहस्तायै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति वशिनी गायत्री। ४-कामेश्वर्यै विद्महे वाग्देव्यै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति कामेश्वरि गायत्री। ४-मोदिनीदेव्यै विद्महे महावाण्यै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति मोदिनी गायत्री। ४-विमलादेव्यै विद्महे मालाधरायै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति विमला गायत्री। ४-अरुणावाग्देव्यै विद्महे श्वेतवर्णायै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति अरुणा गायत्री। ४-जयिनीदेव्यै विद्महे महावागीश्यै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति जयिनी गायत्री। ४-सर्वेश्वर्यै विद्महे

सर्ववागीश्यै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति सर्वेश्वरि गायत्री। ४-कौलिनीदेव्यै विद्महे कुलमार्गगायै धीमहि तन्नो वाचा प्रचोदयात् - इति कौलिनि गायत्री।
- इति अष्टारदेवतागायत्र्यः॥

<u>अथ अष्टान्तरालचक्रदेवता गायत्र्यः -</u>

४-महाबाणिन्यै विद्महे पुष्पात्मिकायै धीमहि तन्नो बाणा प्रचोदयात् - इति बाणिनी गायत्री। ४-पुष्पचापिन्यै विद्महे पुण्ड्रात्मिकायै धीमहि तन्नश्चापा प्रचोदयात् - इति चापिनी गायत्री। ४-पुष्पपाशिन्यै विद्महे पाशाच्छेदिन्यै धीमहि तन्नः पाशिनी प्रचोदयात् - इति पाशिनी गायत्री। ४-अङ्कुशिन्यै विद्महे पुष्पात्मिकायै धीमहि तन्नः सृणिः प्रचोदयात् - इति अङ्कुशिनी गायत्री।
- इति अष्टारान्तरालचक्रदेवतागायत्र्यः॥

अष्टमावरणदेवतानां गायत्र्यः

अथ त्रिकोणाग्रस्थदेवता गायत्र्यः -

४-कामरूपवासिन्यै विद्महे ब्रह्मशक्त्यै धीमहि तन्नः कामेश्वरी प्रचोदयात् - इति महाकामेश्वरि गायत्री। ४-पूर्णपीठस्थायै विद्महे विष्णुशक्त्यै धीमहि तन्नः वज्रेश्वरी प्रचोदयात् - इति महावज्रेश्वरि गायत्री। ४-जालन्धरस्थायै विद्महे रुद्रशक्त्यै धीमहि तन्नः भगमालिनी प्रचोदयात् - इति महाभगमालिनी गायत्री। ४-ओड्याणस्थायै विद्महे परब्रह्मशक्त्यै धीमहि तन्नः सुन्दरी प्रचोदयात् - इति महाश्रीसुन्दरी गायत्री
- इति त्रिकोणाग्रस्थदेवतागायत्र्यः॥

नवमावरणदेवता गायत्र्यः

अथ बिन्दौ गायत्री -

४- क ए ई ल ह्रीं त्रिपुरसुन्दरि विद्महे ह स क ह ल ह्रीं पीठकामिनि धीमहि
स क ल ह्रीं तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।
-इति पराभट्टारिका गायत्री॥

अथ चक्रेश्वरीणां गायत्र्यः -

४-त्रिपुरादेव्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुरा गायत्री। ४-त्रिपुरेश्वर्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुरेशी गायत्री। ४-त्रिपुरसुन्दर्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुरसुन्दरी गायत्री। ४-त्रिपुरवासिन्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुरवासिनी गायत्री। ४-त्रिपुराश्रियै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुराश्री गायत्री। ४-त्रिपुरमालिन्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुरमालिनी गायत्री। ४-त्रिपुरासिद्धायै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुरासिद्धा गायत्री। ४-त्रिपुराम्बायै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति त्रिपुराम्बा गायत्री। ४-महात्रिपुरसुन्दर्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् - इति महात्रिपुरसुन्दरी गायत्री।

- इति चक्रेश्वरीगायत्र्यः॥

अथ पञ्चपञ्चिकागणगायत्र्यः -

अथ पञ्चलक्ष्म्यः गायत्र्यः-

४-श्रीविद्यायै विद्महे महाश्रियै धीमहि तन्नः श्रीः प्रचोदयात्
- इति श्रीविद्या गायत्री।

४-लक्ष्म्यै देव्यै विद्महे श्रीदेव्यै धीमहि तन्नः श्रीः प्रचोदयात्
- इति लक्ष्मीदेवी गायत्री।

४-महालक्ष्म्यै विद्महे महाश्रियै धीमहि तन्नः श्रीः प्रचोदयात्
- इति महालक्ष्मी गायत्री।

४-त्रिशक्तिलक्ष्म्यै विद्महे महाभैरव्यै धीमहि तन्नः श्रीः प्रचोदयात्
- इति त्रिशक्तिलक्ष्मी गायत्री।

४-साम्राज्यलक्ष्म्यै विद्महे जयङ्कर्य्यै धीमहि तन्नः श्रीः प्रचोदयात्
- इति साम्राज्यलक्ष्मीगायत्री।

-इति पञ्चलक्ष्म्यः गायत्र्यः॥

-

-

अथ पञ्चकोशाः -

४-श्रीविद्यायै विद्महे महाकोशेश्वर्यै धीमहि तन्नः कोशा प्रचोदयात्

- इति श्रीविद्या गायत्री।

४-परंज्योतिषे विद्महे प्रणवात्मिकायै धीमहि तन्नः कोशा प्रचोदयात्

- इति परंज्योतिष गायत्री।

४-परनिष्कलायै विद्महे परशांभव्यै धीमहि तन्नः कोशा प्रचोदयात्

- इति परनिष्कला गायत्री।

४-अजपायै विद्महे हंसात्मिकायै धीमहि तन्नः कोशा प्रचोदयात्

- इति अजपा गायत्री।

४-मातृकायै विद्महे वागीश्वर्यै धीमहि तन्नः कोशा प्रचोदयात्

- इति मातृका गायत्री।

- इति पञ्चकोशाः गायत्र्यः॥

अथ पञ्चकल्पलताः -

४-श्रीविद्यायै विद्महे कल्पलतेश्वर्यै धीमहि तन्नः कल्पलता प्रचोदयात्

- इति श्रीविद्या गायत्री।

४-त्वरितादेव्यै विद्महे महादेव्यै धीमहि तन्नः कल्पलता प्रचोदयात्

- इति त्वरिता गायत्री।

४-पारिजातेश्वर्यै विद्महे कामप्रदायै धीमहि तन्नः कल्पलता प्रचोदयात्

- इति पारिजातेश्वरी गायत्री।

४-त्रिकूटायै विद्महे जगज्जनन्यै धीमहि तन्नः कल्पलता प्रचोदयात्

- इति त्रिकूटा गायत्री।

४-पञ्चबाणेश्यै विद्महे सर्वसंक्षोभिण्यै धीमहि तन्नः कल्पलता प्रचोदयात्

- इति पञ्चबाणेशी गायत्री।

- इति पञ्चकल्पलताः गायत्र्यः॥

अथ पञ्चकामदुघानां गायत्र्यः -

४-श्रीविद्यायै विद्महे कामदुघेश्वर्यै धीमहि तन्नः कामदुघा प्रचोदयात्
- इति श्रीविद्या गायत्री।

४-अमृतपीठेश्यै विद्महे अमृतेश्वर्यै धीमहि तन्नः कामदुघा प्रचोदयात्
- इति अमृतपीठा गायत्री।

४-सुधासूत्यै विद्महे सुधात्मिकायै धीमहि तन्नः कामदुघा प्रचोदयात्
- इति सुधासूता गायत्री।

४-अमृतेश्वर्यै विद्महे विश्वदीपिन्यै धीमहि तन्नः कामदुघा प्रचोदयात्
- इति अमृतेश्वरी गायत्री।

४-अन्नपूर्णायै विद्महे सर्वसंजीविन्यै धीमहि तन्नः कामदुघा प्रचोदयात्
- इति अन्नपूर्णा गायत्री।

- इति पञ्चकामदुघानांगायत्र्यः॥

अथ पञ्चरत्नविद्यानां गायत्र्यः -

४-श्रीविद्यायै विद्महे रत्नेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति श्रीविद्या गायत्री।

४-सिद्धलक्ष्म्यै विद्महे रत्नेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति सिद्धलक्ष्मी गायत्री।

४-मातङ्गिन्यै विद्महे रत्नेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति मातङ्गी गायत्री।

४-भुवनेश्वर्यै विद्महे रत्नेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति भुवनेश्वरी गायत्री।

४-वाराह्यै विद्महे रत्नेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्
- इति वाराही गायत्री।

- इति पञ्चरत्नविद्याः गायत्र्यः॥

इति पञ्चपञ्चिकागणगायत्र्यः॥

अथ षड्दर्शनगायत्र्यः -

४-चतुराननाय विद्महे वेदवक्त्राय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्

- इति ब्रह्म गायत्री। (वैदीकदर्शनम्)

४-नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्

- इति विष्णु गायत्री। (वैष्णवदर्शनम्)

४-आदित्याय विद्महे मार्ताण्डाय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्

- इति सूर्य गायत्री। (सौरदर्शनम्)

४-सर्वेश्वराय विद्महे शूलहस्ताय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्

- इति शिव गायत्री। (शैवदर्शनम्)

४-महासिद्धाय विद्महे सर्वज्ञाय धीमहि तन्नो बुद्धः प्रचोदयात्

- इति बुद्ध गायत्री।(बौद्धदर्शनम्)

४-सर्वसंमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्

- इति शक्ति गायत्री। (शाक्तदर्शनम्)

- इति षड्दर्शनगायत्र्यः॥

अथ समयविद्यानां गायत्र्यः -

<u>पूर्वसमया -</u>

४-सर्वोन्मन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

- इति सर्वोन्मनी गायत्री।

<u>दक्षिणसमया-</u>

४-बगलाम्बायै विद्महे ब्रह्मास्त्रविद्यायै धीमहि तन्नः स्तम्भिनी प्रचोदयात्

- इति बगलाम्बा गायत्री।

<u>पश्चिमसमया-</u>

४-कालरात्र्यै विद्महे कालेश्वर्यै धीमहि तन्नो मोहिनी प्रचोदयात्

- इति कालरात्री गायत्री।

तन्त्रान्तरेषु जयदुर्गा-कुब्जिका-प्रत्यङ्गिरा-दुर्गाः पश्चिमसमये देवता इति। तथा-

४-नारायण्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात्

- इति जयदुर्गा गायत्री।

४-कुब्जिकायै विद्महे नरान्त्रमालायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

- इति कुब्जिका गायत्री।

४-अपराजितायै विद्महे प्रत्यङ्गिरायै धीमहि तन्नः उग्रा प्रचोदयात्

- इति प्रत्यङ्गिरा गायत्री।

४-महादेव्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

- इति दुर्गा गायत्री।

<u>उत्तरसमया-</u>

४-वज्रवैरोचिन्यै विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

- इति छिन्नमस्ता गायत्री।

४-कालिकायै विद्महे श्मशानवसिन्यै धीमहि तन्नो घोरे प्रचोदयात्

- इति काली गायत्री।

४-तारायै विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

- इति तारा गायत्री।

(आम्नायविद्यानां गायत्र्योऽत्रैवान्तर्भूता बोद्धव्याः।)

ॐ तत् सत्॥



